॥ श्रीः ॥

हरिनामस्मरणी.

तथा

दोहावली व रामदास्याष्टक.

श्रीस्वामिमहाराज रघुनाथदासजी
वैकुंठवासीकृत.

जिसे

खेमराज श्रीकृष्णदासने
बंबई
निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयमें मुद्रित
कर प्रकाशित किया.

संवत् १९६६, शके १८३१.

इसका सर्वाधिकार प्रकाशकने स्वाधीन रक्खा है.

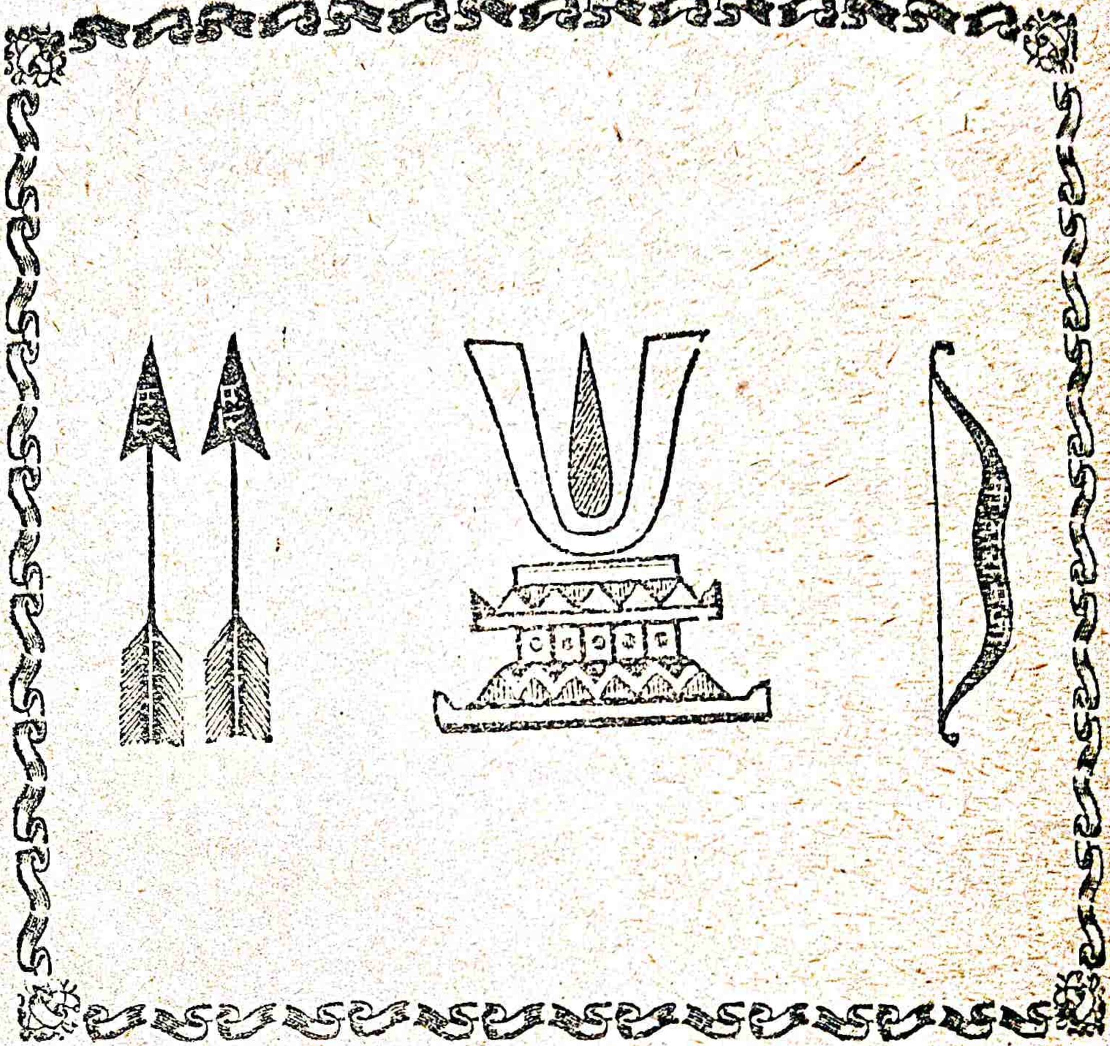

भूमिका ।

प्रगट हो कि श्रीअयोध्यापुरीमें यह जो माहात्मा श्रीमत्परमाचार्य परमविज्ञानी श्री १०८ श्रीस्वामी रघुनाथजीके महाराज जो प्रगट हुयेसो साक्षात् श्रीरघुनाथदासजी विभूति अवतार हुये काहेसे कि इनके जितने चरित्र देखनेमें आये सो सब अलौकिक हुये जो कहनेकीसामर्थ्यनहीं परंतु मैं(मेरा राम)अपनी वाणीके सफल हेतु मंदबुद्धिसे दो चार बात कहताहौं प्रथम यह श्रीमहाराजजी कान्यकुब्ज ब्राह्मणथे बारहबंकीके जिलामें पैंतेपुर ग्राममें अन्नके राशिके ऊपर जन्म हुआ कुछ कालमें वहाँ बाल पौगंड कुमार लीला करि किशोर अवस्था में इस संसारको असत्य जानकर घरको त्यागके लखनऊमें जाय बादशाही पल्टनमें रापट साहबके पास रापट पल्टनके

तोपखानेके सिपाहियोंमें नायक हुये, अपनी नर-नाट्य लीला दिखानेके हेतु सो एक रोजका जिक्र है कि आप तो खुद अपने श्रीठाकुरजीके वास्ते हाथसे रसोंई करके श्रीरघुनाथजी को थारभोग लगायके और आप मानसी ध्यानमें बैठेहैं कि इतनेमें वागरदेशकेराजाकीसैना लखनऊपर चढि आई कि उसके तूफानको देखके साही पलट-नके सिपाही सब भागगये उससमयमें रापट-साहब अपनी आंखोंसे क्या देखतेहैं कि अकेला एक नायक रघुनाथ सिंह नामकरके जो है सो सब तोपोंकी फैर कररहाहै यहाँतक बन्दोबस्त उस युद्धमें किया कि थोडे अरसेमें वह शत्रुकी सैना भगगई तत्पश्चात् वह मूर्ति अन्तर्द्धान होगई तब साहब बहादुरने श्रीमहाराजजीको बुल-वाया और कहा कि हम आजकी बहादुरी तुम्हा-री विलायतको लिखते हैं क्योंकि ऐसी सामर्थ्य

किसी मनुष्यमें नहीं पाई जातीहै, तब श्रीमहाराजजीने कहा कि हमको तौ इस युद्धकी कुछ खबर नहीं है तब साहबने यह बात नहीं मानी, श्रीमहाराजजीने तुरंत इस बातकी सबूत देकर इस्तीफा दाखिल किया और आप यह नाट्यलीलाकर इस दुनिये नापाइदारको छोड फकीरी कुबूल किया श्रीगंगाजीके किनारे हृषीकेशको चलेगये कुछ काल श्रीगंगाजीके किनारेकिनारे श्रीकाशीजीतक उञ्छ वृत्ति धारण किये विचरते रहे तदन्तर श्रीअयोध्याजीमें श्रीविद्याकुंड जो एक स्थान है वहाँ के एक माहात्मा श्री १०८ श्रीस्वामी बलदेवदासजी मौनीजी महाराज जिनकी बैठक श्रीवासुदेवघाट सो श्रीमहाराजजीके गुरु थे उन्होंने एकवैष्णव भेजकरके श्रीगंगाजीके किनारेसे अपने पास बुलालिया पंद्रह वर्षतक वासुदेव घाटपर रहकर भारी तपस्या

और खूब साधुसेवा किया जब साधुवोंका हजूम भारी होनेलगा तब वहाँसे उठकर श्रीरामघाट-पर श्रीसरयूके किनारे श्रीमान् श्री ५ राजामा-नसिंहबहादुरजीके रियासतमें गाँउ पर हटाके माझामें एक सूखा पीपलका वृक्ष रहा उस-के नीचे आन बैठे और थोडेदिनोंके पीछे वह पीपलका वृक्ष भी हराहोगया जो अब तक भारी दरख्त होकरके विराजमान् है उसका नाम ढूँडापीपल करके विख्यात है ऐसे चरित्र अनेक हैं सो उसीके नीचे एकछावनी भारी लैन साधुवोंके रहनेके वास्ते कायम किया जिसमें दो दो चार चार हजार साधू आने जाने लगे और मुद्दतोंतक बडी भारी साधुसेवा किया और देश देशांतरके राजा महाराजोंने आय आय दर्शन लिया और आप एक हरिनामस्मरणी ग्रंथ बना-या कि उसमें परात्पर ब्रह्म गोलोकनाथ साकेत-

विहारी श्रीसीतारामजीके नाम रूप लीला धाम-की व्याख्या जिसमें नानाप्रकारके छन्द, कवित्त, झूलना, सवैया, रेखता, दोहा इत्यादि धरेहैं, तत्पश्चात् आप अपने सत्संगसे श्रीअयोध्यावासी महात्माओंको खूब प्रसन्न करके भारीशोभाके साथ संवत् १९३९में पूसमहीनाके शुक्लपक्ष दशमी गुरुवार मध्याह्नसमय सूर्य उत्तरायण जानकरसंत-समाजके मध्यमें श्रीसीताराम नाम धुनि होतेहुये अपनी गद्दीपर विराजमान् प्राणायाम साधकर परमधाम यात्रा करतेभये॥दोहरा॥ पूससुदीदशमी गुरुवासर, मध्यदिवसदिनकर उत्रायन। संवत् १९३९उनइस्सै उन्तालिस, महाराजकियेसरसूशैन॥ १॥अब जो हैं उनकी गद्दी पुजातीहैं और देश देशांतरके सेवकोंके मनो कामना सब कुछ पूर्ण होतीहैं और श्रीमहाराजजीके कृपापात्र युगल चरण पादुकाके अवतार परम भागवत साधुसेवी

उसगद्दीके अधिष्ठाता श्री ६ श्रीमान्महंतनाम अवलंबी उपाय शून्य श्रीजगन्नाथदासजीमहाराज वा श्री ६ श्रीमान् नायबमहंत श्रीपंडित भगवान-दासजी महाराज विराजमान हैं और परमार्थमें बड़ी प्रीति कररहेहैं अब मैं जोहौं सरकारी गुलामों में सबसे छोटा गुलाम नालायक द्वारकादास झाडूबरदार तिसने अपने मंदबुद्धिसे विचारकिया कि 'हरिनामस्मरणी' ग्रंथ छपजाय तौ बहुतसे महात्माओं और सेवकोंकी अभिलाषा पूर्ण हो प-रंतु बहुत तलास किया वहाँ ग्रंथ नहीं मिला उसमें-से छिन्नभिन्न जहाँ तहाँ के कुछ कवित्त, दोहे हा-थलगे, सो इस छावनीमें एक परम भागवत यमु-नादासजी श्रीवैष्णव रहतेहैं उनके हस्ताक्षर बहुत शुद्धताके साथ लिखवाय करके पर उपकारार्थ छापने के वास्ते छोटूलाल ओ लक्ष्मीचंद कुतुब-फरोसके हाथ बम्बई 'श्रीवेङ्कटेश्वर' यन्त्रालय

के अध्यक्ष श्रीकृष्णदासात्मज गंगाविष्णु खेमरा
जजीके पास भेजा गया जिसमें बाबूके छापेखा-
नेको यशहो परंतु सिवाय लाला छोटूलालजी वा
लाला लक्ष्मीचन्द्रजीकेऔर किसी दूसरेको अधि-
कार इस पोथीके छापनेका नहींहै क्योंकि हमारे
श्रीस्वामीमहाराजजीकी मरजी छपानेकी नहींथी
सो इनके माता पिता हमारे श्रीमहाराजजीके चेले
थे इसवास्ते इन दोनों भाइयोंने हमारे रामसे बहुत
विनती और आरजू करके यह पोथी हमसे लिया
सो इसलिये इस पोथीके छापनेका हक़ इन दोनों
भाइयोंको दिया गया आगे श्रीकृष्णदासात्म-
ज श्रीलालागंगाविष्णुजी क्षेमराजजी आप मेह-
र्बानगीके साथ इस पोथीके जो पदहैं तिनकी
मैत्री औ अक्षर औ मात्रा सब शुद्धकराइ लीजिये।
गा परंतु अक्षर मोटे औ कागज पुष्ट गुटकानु-
सारहो जिल्द दफ्ती बँधीहुई उसमें कपडा लगाहो

सो जानियेगा ज्यादा श्रीरामस्मरणं शुभमस्तु ॥

॥ सोरठा ॥

सियमुख सोभासाज, धोये हाथ विरंचिरचि ॥
जलचुइभयेद्विजराज, करझोरेतारेभये ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

वलकलवसनऔफलअशन, तृणशय्यावनप्रीति॥
ता‌हि समय लंकादयो, यह रघुकुलकीरीति ॥१ ॥
ता कुलकी उपासना, जानत सकलजहान ॥
प्रणतपाल सुन आयऊं, सुनिये कृपानिधान॥२॥
सबगुण लायक हौ प्रभू, सदादीनपर प्रेम ॥
मतमतांत सो देखिये, शरणागतपर नेम ॥ ३ ॥
महा अधम पावन नहीं, पतितनमों अतिनीच॥
नाम द्वारकादास है, बडी छावनीबीच ॥ ४ ॥
पाँचोरस इस काव्यमें, पढि सुनि करिय विचार॥
मोदप्रमोदबढावही, रसिकनको अधिकार॥ ५ ॥

इति भूमिका समाप्ता ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीसीतारामौ जयतः ।

अथ हरिनामस्मरणी ।

दोहा ॥

आदि अंत उपदेश विन, परत न प्रभुपद देषि ॥
तेहिते गुरुपद प्रथम बुध, वंदन करत विशेषि ॥१॥

प्रथमकवित्त ॥

श्रीगुरु प्रताप उर आनिकै प्रथम पद वंदन करों मैं गणनायक विनायकको ॥ करत सुसहज सुभाय सद्ग्रंथ न निवाह निरविघ्न रस एक असलायकको ॥ सकल सुसिद्धिवरदायक दयाल शुद्ध बुधि नता हेत ताहि करिकै सहायकको ॥ करम वचन मन जन रघुनाथ फोरि अगुण सगुण गुण गावो रघुनायकको ॥ १ ॥

सवैया ॥

श्रीगुरुपाँयनकी रज जैति अजादिक देवनके शिर मन्यहै॥पयपुजनीयनमें तिनमें रघुनाथ यहै अब अग्रम गन्यहै॥ भक्ति सुसाधन सिद्धि करन्य हरन्यसबै दुख दोष दरन्यहै ॥गुरुपद पंकज रेणुकि आदि शरण्य शरण्य शरण्य शरण्यहै॥२॥नामस्वरूप सुलीलहु धामश्रीरामक एक अनंद अरन्यहै ॥ जासु कृपा मनमत्त मृगेन्द्र सप्रेम सोईवनमें विचरन्यहै॥ मन वच कर्मनसे अपने सपने रघुनाथ न जानत अन्यहै॥गुरुपद पंकज रेणुकि आदि शरण्य शरण्य शरण्य शरण्यहै ॥ ३ ॥ रामषडक्षर मंत्र दयाल दियो गुरु गूढ गहे सो अनन्यहौं॥जाप तजक्तसो राग विराग भयो अनुराग सो मानत धन्यहौं ॥ और कृपा कछु जानि पऱ्यो प्रभु शील सुभाव सोऊ सुख भन्यहौं ॥ ताहिते आदि पदाब्जनकी मैं शरण्य शरण्य शरण्य शरण्यहौं ४

कवित्त ।

सुपन समय श्रीगुसांईजीदै दास आश सहज सुभाय जौ न कह्यो जस टेरिकै॥भयो तौन तस कह वेक अभिलाष सो सुभाय करजोरिकरि आज्ञाला-यो फेरिकै ॥ सो तौ रघुनाथ बुधिबल न विवेक एक कहवेक फेरि जब देख्यो हि अहेरि कै ॥ जा निपरयो यहै राम आपनो सुयश तौन आपै आप बैठिकै कहै हैं उर प्रेरि कै ॥ ५ ॥ प्रथम रामायण समेत श्रीगोसांई पद वंदन करत कछु परयो है जनाय कै ॥ बहुरि करम मन वाणी विप्र संत सुर सहित भवानी शंभु शारद मनायकै॥ शुक सनकादि प्रहलाद नारदादि नर नाग देव किन्नर सबन शिरनायकै।कहन चहत रघुनाथनाथ गाथ निज आपनी सुमति वाणी विमल बनायकै ॥ ६ ॥ जाहि बल विदित तिहारो ताहि कौनजग जानत जहाँ लौ जौन काज साज सऱ्यो है ॥ दोउ वैरी बंधुजन देख्यो सुन्यो नाम राम तेरे न कहेसो

तिन्हैं अंगीकार कर्योहै ॥ थोरी प्रीति प्रभुसे विशेषि कारि कै सो कहि दैवी कपीश ईश ईदेह मानौ धन्यो है ॥ सुनत सुनाय सरकारसे समीपी आप यहै सुनि समुझि भरोस मोहिं पन्यो है ॥ ॥ ७ ॥ प्रभुसे कहौं क अहौं जानौ जन्महीं से जो जनायवेकी रीतिसो न एको उर आनी है ॥ अबौ न विराग ज्ञान ध्यान जब कब मुख कहत सुनाम राम महिमा न मानीहै ॥ कबौंकै कृपालु कृपा करैं सो उपाय अब एकौ रघुनाथ तौन और अनुमानी है ॥ करम वचन मन तेरे महावीर मन मेरे एक तेरेहि सिपारसकी मानी है ॥ ॥ ८ ॥ ह्वैरह्यो है ह्वैहै अबौ जानौ जस ताको अस जगत त्रिकालकहि सकत अनीको कौन ॥ केहूभाँति कबहूँ भरोसभारि आयो जाहि भरत लषण लाल शत्रुशाल जीको जौन ॥ जप तप जाग त्याग साधन विराग ज्ञान ध्यान आन

पूजत मनोरथ महीको तौन ॥ नीकोसो पदुमपद बंदि रघुनाथगाथ गावत निरंतर निकाम राम सीको रौन ॥ ९ ॥ है जो वेदविदित उपाय कोटि कोटि करै तेरी वन कृपा कलिकलुषनिकंद नको ॥ अहो राम वल्लभी तिहारे विन कहौ कौन करहिं सँभार हम ऐसे मतिमंदनको ॥ जानत सो यदपि तदति रघुनाथ मन वचन करम करि कहैं पदवंदनको ॥ चहैं तौन ओर यहै रहै रसयोफ सदा सहित किशोरी ध्यान तेरो रघु-नंदनको ॥ १० ॥ सत कोटि मथि काटि लीन्ह्योहै गरलपानि कीन्ह्यो है कहोसो नाम ऐसो कौन नामिको ॥ नाम बल सोख्यो सिंधु अवौ कासी हूम मर्त कर्त जीवन जहाँलौं जौन मुक्ति अनुगामिको ॥ औरो शिव सती तनुत्यागकै समै सो मानों प्रगट देखायो भल भाव सेव्य स्वामि को ॥ साँई उर आनि रघुनाथ जान जनिकै

निरंतर निःकाम कर्त रामहि नमामिको ॥ ११ ॥
जहाँ जब आरत पुकारो जन तहां तब प्रण पाल
वेको प्रभु कहो कहाँ खाँम की ॥ वालमीकि
जमन अजामिलकी गति अति मोद होत महिमा
सुनत जाके नामकी प्रगट पुराण आठ दशहु
षटहु शास्त्र वेद ऋग यजुर अथर्वन औ सामकी ॥
सहज सुभाय रघुनाथ जन जानि परै सर्व पसरन
सुसिद्धान्त सीतारामकी ॥ १२ ॥

सवैया ॥

रामहिं नाम महेश दिनेश गणेशहु शेषहु वेस
पुकारो ॥ रामहिं पूरण ब्रह्म परे परहैं रघुनाथ
कहैं श्रुति चारो ॥ रामके नामसे नामपरे कछु और
कहैं तिनके मुख छारो ॥ जो न भजै अजहूं सुनि
सो जग जानहु जन्म वृथा जनु हारो ॥ १३ ॥
राम मरा कहि ब्रह्म भये मुनि म्लेच्छहु नामहि
राम पुकारो ॥ नाम नारायण बालकको
कहि विप्र अजामिल धाम सुधारो ॥ नामहि सों

सब जीवनको शिव काशिहुमें गति देत वरा
रो॥ जो न भजै अजहूं सुनि सो जग जानहुँ जन्म
वृथा जनु हारो ॥ १४ ॥ नाम अनेकन एकते
एक परे परनामसोराम विचारो ॥ नामसचेतनको
गतिदायक राम प्रत्यक्ष पषाणहिं तारो ॥ जानहु
जक्त प्रकाशक रामको नाम स्वरूप न मानहु
न्यारो ॥ नेमलिये रघुनाथहिये रसना अब राम-
हि राम पुकारो ॥ १५ ॥

कवित्त ।

प्रगट प्रत्यक्ष नाम रामहि कजानौ जपि
जाको कवि आदिकदै पायो पद ध्रुव है ॥
नामबल परस सकेत तामोही कहत त्रि वो तामो
रामरमतीत हुन दुअहै ॥ परम अनूप राम
रमनस्वरूप सन निरखि रम्योहै सनकादिक
शंभुअहै ॥ सोई सुनि समुझि अनन्यता न आ
वै तोपै जानो रघुनाथ ताके जानिवे में धुअहै ।
॥ १६ ॥ रंचक नखेद भेद तजिकै अभेदमन

सहज सुभाय वेद वदत न नयेहैं ॥ कारिकै अनेक उपदेश अति गीताहूमें शरण श्रीकृष्णकहि पारथहि दयेहैं ॥ भागवतहूमें भक्तिभावसों रहित तौन ज्ञान शुकदेव तुषघात गाय गये हैं ॥ भक्ति रससानी सुनिवानी रघुनाथ सोई समुझि विचारि मन सबमानि लयेहैं ॥ १७ ॥ सुना चहै चित तौ चरित सुनै रामहीके गुणा चाहै नित तौ गुणन करै गाथसो ॥ नावा चहै रामहि नवावा करै माथ परा करा चहै रामके करम करै हाथसो ॥ आप नैव इष्ट तौन मानि सबहीन माहि जानिकै करहिं राम रंगिनके साथसो ॥ करम वचन मन-हीके हम नीके येई रामके उपासक अवशि रघु-नाथसो ॥ १८ ॥

घनाक्षरी ।

नामनमों रामनाम मानौ सो अनूप सर्वरूप नको भूपरूप जानौ अब जाको है ॥ शिला,गति

दायक कृपाल लीला कौनकी है सतकोटि चरित अपार और काको है ॥ नामरूप लीला धाम रामको सरवपर मानौ मत यहै आठदश चारि छाको है ॥ ऐसे सुनि समुझि श्रीरामकी शरण जो न आवै रघुनाथ जन जानो धृक् ताको है ॥ १९ ॥ शरण प्रसिद्ध शुकदेव वालमीकि मुनि कीन यहै राम कृष्ण कीरति कलीन है ॥ शिवहु शरण शिवपुरी ते परत जानि करत मरत मुक्ति रामही अधीनहै ॥ शेष सनकादि प्रहलाद नारदादिकसे रामकी भगति जल कीन मन मीन हैं॥ आवै न शरण सुनि कहि प्रभु याहि ताहि जन रघुनाथ जानौ ज्ञानगुणहीन है ॥ २० ॥ अंबरीष शरण छुड़ायवेके हेतु ऋषि गयो दुरवासा देखो भयो जौन हाल है ॥ ऐसे आय ऊधौ ब्रजवासिन दरश पाए गयो अभिमान ज्ञान भयो भक्ति भाल है ॥ गीताहूके अंत एक शरण प्रमाण कही

पाई विजै पारथ कृपाल कृष्णपाल है ॥ जाहि न सुहाय ताहि जन रघुनाथ जानो पशुकी प्रकृति ओढ़े मानुषकी खाल है ॥२१॥ कहैं ज्ञानी ज्ञान विनु आवे न समान तासु क्रोधता जहाँ तहाँ अद्वैतताको नाश है ॥ लोमश दुर्वासा शाप दीन्हो करि क्रोध बोध चीन्हो न कहासो रस एक अवकास है ॥ हरष विषाद अंबरीष न भुशुंडि उर आन्यो यह जान्यो हरिप्रेरक प्रकाश है ॥ सहज सुभाय रघुनाथ जन जानि यह सारी सरव-ज्ञता शरणहींमें वास है ॥ २२ ॥ रामहिंके नाम नित नेतिकरि कहैं श्रुति शरण सुभाइ सोई जानो सब सारोकै ॥ सोई नाम महिमा समुझि शिव-लीन नीके सतकोटि चरित अपार निरवारोकै ॥ सीतारामनामही केवल देखो कुंभजहूं सोख्यो सिंधु बिंदुजल बढ़त निर्वारोकै ॥ जाहि न प्रतीति प्रीति आवै रघुनाथ ताहि करम वचन मन त्या-

गै सुखकारोके ॥ २३ ॥ सुनौ सब प्रगट प्रमाण करि मानौ यहै जानौं अब ताको विधिवाम प्रतिकू लहै ॥ शब्द सपरस गंध रूप रस वश विषै मानस मलीन लिंगकारण अस्थूल है ॥ करमवचन मन सपने न सुख दुख दिन दिन बढत अनेक शोक शूलहै ॥ जोलों न सम्हारि सीताराम नाम भजै तोलों जन रघुनाथ जानो तामें बडी भूलहै ॥ २४ ॥ यहै नाम आठो याम जानौ यमदूतन सो रघुनाथ बार बार कहि समुझाय गो ॥ अव- शि विचारो अजामिलके प्रसंग माहिं परी जो विपत्ति तौन फिरि परि जायगो ॥ अधमसे अध- मके मुख न कढत शब्द सुनत रकार जो न तुरत परायगो ॥ निकसत मुखसे मकारके कहत यम नाह त्वं तु थिति ये रसातलहि जायगो ॥ ॥ २५ ॥ करत विचार बार बार संत सार यहै एकै है उपाय जुपै पतित तरनकी ॥ देव नर नाग

नाक भूतल पताल माहिं जीव को न और ठौर दूसरी शरणकी॥रामनाम माहिं रघुनाथ जन जेती गति संचित प्रालब्ध क्रिय अघन हरन की ॥तन मन वचन करमसब भाँतिसे न तेती गति पातकीम पातक करनकी ॥ २६ ॥ मरा मरा कहत मुनीश मन ब्रह्म भयो राम राम कहत को जानै कौन पद है॥ जमन हरामके कहत रामधाम पायो प्रगट प्रभाव भल पोथिनमें गद्दहै ॥ काशिहु मरत उपदे-शत महेश जाहिं जानि नपरत ताहिं मनमोह मद है ॥ ऐसेहू समुझि सीताराम नाम जो न भजै जन रघुनाथ जानो तासों फिरि हद्दहै ॥ २७ ॥ महाराज स्वामी सीतारामकी भगतिविन रतिहू न मतिमानौ ज्ञानगुण रद्दहै ॥ कहत सुनत सब प्रगट प्रभाव यहै आदि अंत सकल पुराण वेद गद्दहै ॥ भायहु कुभायहु अनख आलसहु कहूँ निकसत नामविन सति मोह मद्दहै ॥ ऐसेहु

समुझि रघुनाथ जन जो न भजे कहब सुनब जानो तासों फिरि हदहै ॥ २८ ॥ योग तौ सराही सोई रहै हरिध्यान ही वियोग तौ सराही सोई जैसे शुकशंभुको ॥ वेष तौ सराही सोई कण्ठी कण्ठडारि दूरि करे काम क्रोध मद लोभ मोह दंभको ॥ सत्य तौ सराही सोई साधै सतनाम नेह दान तौ सराही सोई दयाही अरंभको ॥ ज्ञानतौ सराही जो विज्ञान होइ रघुनाथ विद्या तौ सराही जो लखावै राम ब्रह्मको ॥ २९ ॥ शुक सनकादि प्रह्लाद नारदादि देखौ जाहि पद माहि वालमीकि आदि डटे हैं ॥ आदि अंत मध्य यहै जानि मानि सार सोइ संत श्रुति शेष औ महेश वेस रटेहैं ॥ सीताराम वही रघुनाथ जन जानौ जौन ब्रह्मजीव आतमा अनेकछटा छटेहैं ॥ सोई सबहीनमें प्रकाश जोपै एक कोई अंध न निहारौ रवि कहाँ कहाँ घटेहैं ॥ ३० ॥ जोतो जीव शुद्ध निज

स्वरूपमें मग्नमन एकरस रहै यहै ज्ञान ज्ञानी गायोहै॥ब्रह्म इन्द्र आदिहै जहाँ लौं रघुनाथसर्वविषै रागरहित विरागसो कहायो है ॥ जाके अंश सर्व जक्त व्यापक समान मानौ सोई रघुवंशमणि भक्ति भक्तभायोहै ॥ ऐसो ज्ञान पाय जो न भजो राम राय हाय मानौ जग आय जीव औरो डहकायो है ॥ ३१ ॥ मनुज सहस्रमध्य धर्मव्रत शील कोई कोटिमध्य विषयी विरक्त जक्त जोईहै ॥ कोटिन विरक्तमध्य सम्यक सुकृत ज्ञानवंतनमें कोटि मुक्त जीवनमें कोईहै ॥ तिनहूँ सहस्र मध्य सर्वसुख खानि अति दुर्लभ विज्ञानी ब्रह्मलीन्ह नर लोईहै॥ सर्व परे प्राप्ति भक्ति तजै रामचंद्र की तौ मंद अभिमानीमानौ मूढ अतिसोईहै॥॥३२॥जपतपनेम योग संयम समाधि ध्यान ज्ञान दम दया दान धर्म धुरधरसो॥वेदन पुराणन पठन करै कोटि जहाँ जौन व्रत तीरथ अटन अनुसरसो ॥ सबसुख

सुकृत सहायक सुभाय पंच अंग जब सेवन अनेक जन्म करसो ॥ पावै कहुँ रामकी भगति रघुनाथ तब जानौ यहै जीव भवसिंधुसेतीतरसो ॥ ३३ ॥ जहाँ लगिसेवन अनेक जन्म करै देवी देवन गणेश गौरि सहित महेशकी ॥ जानै सुने सकल पुराण वेद भेद कहै समुझै विचारै सर्ववाणि सर्व देशकी ॥ जप तप योग औ विराग ज्ञान ध्यान करै औरो कोटि कोटि कीन साधन कलेशकी ॥ पायो कौन फल रघुनाथ जौलौं जो न भज्यों कोशलकिशोर औ किशोरी मिथिलेशकी ॥ ३४ ॥ कीन्हे रघुनाथ नाथ सेवरी सनाथ माथ नाये अपनाये कपि कोल भिल्ल भालको ॥ सहज सुकंठ बंधु वैरीको विभीषण सो शरणाये शोकसिंधु बूडत उबालको ॥ दीनजन बंधुताई विदित विचारि सुनि समुझि कहौ न और ऐसोहै दयाल को ॥ भजो हाल कोशल कृपाल कालसो न फेरि

चली चाहौं मारौं मूढकै तो अंत गालको ॥ ३५ ॥
कहै शुद्ध सुगति सचेतनकै कौन पग परत भौपा-
रजड पाहन अपारो सो ॥ योगकै योगीशगति
याचै जौन पायो तौन निगमनिषिद्ध गिद्ध
आमिष अहारो सो ॥ सहज सरलता समुझि
राम और माना झुकै मन मेरो यहै येतनो सहा-
रोसो ॥ जानो राम रावरो सों न सहज् सुभाव रघु-
नाथ जाको ताको मुख त्यागो करी कारोसो ॥
॥ ३६ ॥ देही देहरहित विभाग सीतारामरूप
आदि अंत मध्य श्रुति कहत सनातन है ॥ हरे सु
नु भाँति ब्रह्म व्यापक समान श्रुति बोलत प्रमा-
ण यहै कल्पित तौ बातन है ॥ पढिके पुराण वेद
भेद सब जानै इहूँ विना सत्संग रंग औसौ दूध
भातनहै ॥ सत चित आनंदके कंद रामचंद्रको
न भजै रघुनाथ सोई मानौ यमयातनाहै ॥ ३७॥
भगति सुगेह नर देहद्वार जानौ तामे लक्ष चौरा-

सी योनि जानो सोई फेरोहै ॥ भ्रमत भुलानोमोह सानो आसपास वास ठौर न ठिकानो दुख पावत घनेरोहै ॥ कबहूँ नरदेह द्वारपाल संतसंगसो सनेह रघुनाथकरिकरौनिरवेरोहै ॥ ऐसो तन पाय जो न भजो रामराय हाय मानौ चौवरासी ताहि परो फरि फेरोहै ॥ ३८ ॥ अबौप्रियापाससे जो आवै प्रिय क्षेमतासे पूछै सतभायसो सुनावै सुनै कानमैं ॥ ताहिके समान सनमान जौन जानेप्रीति प्रीतमसो फीकि यहै आवै अनुमानमैं ॥ तैसे रघु-नाथ सीतानाथके समीपी साथ परमसनेही जो न जाने जनप्रानमैं ॥ होय भजनीको भलभक्त भाव जानै विन भए नविशेषजानौमानोसोसमा-नमैं ॥ ३९॥ आज कालिह विषयी विशेपीसब-हीसे वादी ब्रह्मज्ञान करैं कर्म कैसे जैसे बर्दहैं ॥ सुनै जो श्रवण सीतारामकी भगतिभाव भंग करिवेको कोई मानो बडे मर्दहैं ॥ शिव शुक

बालमीकिवचन न मानैं मूढ ऐसे अभिमानी
वाणी बोलत बेपर्दहैं ॥ कहैं किनके तौ रघुनाथ-
जन जानौ जौन रामसे रहित ज्ञानमानौ तौन
गईहैं ॥ ४० ॥ कारिके बजार हाट बैठे एकठौर
जाय जहाँ आज कालिह दश बीस खीस वयेहैं ॥
करैं तहाँ सबसे विशेषिब्रह्मज्ञान मूढ मलिन विशेषि
मन विषै माहिं दयेहैं । आनै न विचार उर ऐसे
अंधदेखौ कहूँ शूपके बजायेसे दारिद्र दूरि भयेहैं॥
रामसे रहित रघुनाथजन जौन ऐसे ज्ञानके करैया
तौन गई मिलिगयेहैं ॥ ४१ ॥ भूत कैसो
अगिनि अकास कैसो फूलकेस कच्छपको ऐसो
काकहानी ज्ञान गहौरे ॥ अगुण सगुण सम-
भेद मति मानौ सुनि समुझि बिचारि मन सोई
सुख लहौरे ॥ करम वचन मन कहि नित नेति सब
जाको यश गावै आठ दश चारि छहौरे ॥ यहै
ज्ञान गीता मनमीत रघुनाथ राम सीता राम सीता

राम सीता राम कहौरे ॥ ४२ ॥ महामतिमलिन पाषंडीपंथ दंभी जेहैं करम वचन मन आप अपकारमैं ॥ कहत प्रगट राम कहत का होत हम जप तजो गुप्त लुप्त विषय विकारमैं ॥ जानि परै सीताराम सन्मुख विमुख ताई रघुनाथ सबहीके सबही प्रकारमैं ॥ प्रगट प्रत्यक्ष नर अशन करै जो कोई निकसत स्वाद मुखबाहेर डकारमैं ॥ ॥ ४३ ॥ तीनि भाँति विषयी मुमुक्षु मोक्षमानी नर नारायण सुयश श्रवण सुखलाभहै ॥ पारवती आदि दै गरुड भरद्वाजमुनि औरहू अनेक पायौ कथाहीमें थाहहै ॥ करम वचन मन मानौ रघुनाथजन जानौ जस भक्ति छोडि और न निवाहहै ॥ कैसे हूसे कैसो चांडालसेहू रहित अस और कौन कहै कथा सुनै कहै काहहै ॥ ४४ ॥ सुना चाहै श्रवणचरित सुनै रामहीके गावाचाहै गीतागावै रामगुण गाथसों ॥ नावाचहै माथ रघुनाथहीको

नाम नित करा चहै रामहीके कर्मकरै हाथसों ॥ नामरूप लीलाधाम चारिउ समान मन राखै रस एकसदा सीतानाथ साथसों ॥ करम वचमन नीके निषकाम सेइ रामको उपासक अवशि रघुनाथ सों ॥ ४५ ॥ श्रवणचारित करै कीरति कलित मुख ललित उचारै राम रसनासों श्वाससों ॥कर न करावैं सीताराम प्रतिकर्म अभिअंतर मलिन धोये प्रेमनके आँससों ॥ सदा मुदा सीताराम सुंदर स्वरूप मन सपने न आवै कहूं आशवास सांससों॥सहजसुभाय जन जानौ सोई सबभाँति रघुनाथ रसिक रघूत्तमको दाससों ॥ ४६ ॥ सीताराम नामगुणगुणौआठौयाम सुनौ सीताराम सुयश श्रवण भरि भायको ॥ सीतारामहीसे बालपनसे औ आज लगि दिनै दिन अधिकसनेह सरसायको॥कर्म वच मन जन रघुनाथदास सीता- नाथ छोडि और दूजोजगतमें आयको॥ भूल्यो

माहिं मैं न अब औरको कहावौं मैं तौ दश-
रथसुत दाशरथी रामरायको ॥ ४७ ॥ सवैया ॥
राम विहायके कोटिक बात बनाय कहैं तिनके
मुख मूके ॥ राम विहाय जहाँलगि योग औ ज्ञा-
निनके मुखमें लियलूके ॥ श्रीरघुनाथ विहायकै
हाय बनाइ तेई जग जानहुँ चूके ॥ गे छलि ते
बलि जे न गये पदके सदके रघुनंदनजूके॥४८॥
जन्मसों जानत मानतहौं अपनो न कछू सपनो
धनधामसो ॥ मात पिता वनितादिक दै सब छूटि
भयो जगनेह तमासो ॥ हौं रघुनाथ अनाथ-
न नाथ चहौं धन धर्म न मोक्ष हु कामसो ॥ ला-
ग रहों सतभायनसों सि यरामस्वरूप सो रामहि
रामको ॥ ४९ ॥ घनाक्षरी ॥ कुंडलकिरीट पटपी-
तमें चपलवारों चालमें मराल काल कोटिन पौ-
रुषमें ॥ नगनमें मैन वशीकर ऐन सैन वैन
कोकिल अनेक अरविंदु इन्दु मुखमें ॥ सुयशमें

कोटि प्राणपाथ रघुनाथ वारौं अमित भुवन छ-
बि अंगअंग सुखमें ॥ सोई रामरूपसे विमुख ति-
नपर वारौं पल पल एकमें अनेक कोटि दुखमें
॥ ९० ॥ पूतरी नयन अरु नारे अलि कीन्हें
मानौ बंधुक सुमनसेज सोहत सरोजमें ॥ उपमा
न लहत रहत दबि कवि छबि सुखमें मनोज वारौं
मुखमें न चंद्रमें ॥ सोई रामरूपमें रमत स-
नकादि शिव नितप्रति रहत समाधि साधि खो-
जमें ॥ और नहीं प्रोजमन मौज रघुनाथ सो
ई रूपमें निरंतर निहारौं रोज रोज मैं ॥ ९१ ॥
सोहै तनुश्याम पटपीत कहै कौन जौन जोहै ध-
नुबान पाणि तूण कटि कसोहै ॥ कनक किरीट
भाल तिलक विशाल नैन मैन श्रुति कुंडल
कपोल लोल लसोहै ॥ विकुट भ्रुनाशिका चिबुक
दरग्रीव मुख परम अयनआय शोभा सब बसोहै॥
रघुनाथ ऐसो रूप आयो जौन ध्यान करै कै

सो सो अनैसो ज्ञानमान मोहग्रसोहै ॥ ९२ ॥
कहै कौन कहत न आवै आलि आजु जस लाग-
त स्वरूप यह सहज सुभायो री॥नख शिख सुभग
शृँगारन विरंचि रचि चारुरति मारु अंग अंगन
बनायो री॥ जानकी समेत मिलि बैठेरघुनाथदोऊ
देखो न तडित घन मानौ छबि छायो री ॥ ऐसो
श्यामसुंदर स्वरूप जौन आयो आली अपनो
परमफल नैन तो न पायो री ॥९३॥ भ्रुकुटी न-
यन श्रुति कुंडल किरीट कच जाल भालतिलक
विशालभाल भायो री ॥ नासिका सुभुक्त तुंडद-
यी देखि दूजो एक भयो चक्र वक्र शुकसकन उ-
डायो री ॥ मदन मनोजमेंसो शरद सरोज कैसो
कहो रघुनाथ जैसो वदन सुहायो री॥ ऐसो श्या-
मसुंदर स्वरूप जौन आयो आली अपनोपरमफल
नैन तो न पायो री ॥ ९४ ॥ जोहत जो रसिक
चिबुकचारु विंदपीत उपमा अनेक एक खो-

जतक आयो री ॥ मुक्त मणि माल मैं अथाई उर आयग्रह देवदैगुरुन उच्चआसन बैठायो री॥औ-रौ उपवीत पटपीतसो सचीसचाय चपलसमेत घनमानौ घेरीआयो री॥ ऐसो श्यामसुंदर स्वरूप जौन आयो आली आपनो परमफल नैनतौ-न पायो री ॥ ९५ ॥ लीन्हों सुनि श्रवण पुराण गान कीन्हों सुख चीन्हों सुकरम चर्ण तीरथ चलायो री ॥ नासिका सुवास रस रसन परसतन स्वारथ जो औरौ न परतसो गनायो री ॥ तौन तनु मनहिं दिखाये रघुनाथन स्वरूप श्याम सुंदर जो ऐसो उर आयो री ॥सकल सुअंग सुख दायो श्रुति गायो जौन आपनो परमफल नैन तौ न पायो री ॥ ९६ ॥ श्रवण सुशब्द साधि श्वासन समाधि साधि इन्द्रि प्राण पौन गौन कीन्हों क्लेश कायो री॥कबहूँ स्वरूप ज्ञान आयो सोई श्रुति न बतायो सबको स्वरूप सहज सुभा-

योरी ॥ मेरी जान विनहिं प्रयास रघुनाथसो स्वरूप रामरूप सो परत दरशायो री॥ताहिते परात्परऱूप जो न आयो उर अपनो परमफल नैन तौ न पायो री !! ९७ ॥ चारि खानि लक्ष चउरासी योनि जहँ तहँ तेरो प्रतिपाल जो करो सो सब जागोहै ॥ अब नरदेह जौन दीन्हा रघुनाथ तौन चीन्हों न निलज्ज प्रभु परे नानुरागोहै ॥ सुकृत महीमें मानो मूल सतसंग फूल जप तप नेम योग ज्ञानफल लागोहै ॥ भक्तिरस तामो जौन जामो रामनामो शठ सेइ मरो मानो शुकसेमर अभागोहै ॥ ९८ ॥ जेई देखौ तेई कलिकालके कुटिल जीव अहंब्रह्म अपनेक मानत अनैसेहैं ॥ ईश सरवज्ञ अलपज्ञ ये अनीश अस कहेसे कहत देवतावो ब्रह्म कैसेहैं ॥ मनुज महीप नर अवरो अनेक एक ताहिके सुवश सब रहत जे जैसेहैं ॥ तैसे रघुनाथजन जानौ जो समानब्रह्म नमोराम

ब्रह्ममन मानौ नृप ऐसेहैं ॥ ५९ ॥ भावस्वामी सेवक अभाव करि पर्मपद पायो जौन ह्वैहैं ते सुने न कान कोऊहैं । शंभु सनकादि आदि दै दि नेश शेष मंडलेश कौशलेशको भजत मुनि वोऊहैं ॥ रघुनाथजन जीव ईशहि अधीन अस राम रवि उये जौलों किर्ण तौ लौं सोऊ हैं ॥ सहजसुभाय सब कहवेको जानौ तैसे ब्रह्मजीव एकपै वि-शेषि फेरि दोऊहैं ॥ ६० ॥ आजु कालिह ऐसे राममंत्र छाँडि आनमंत्र साधि सिद्धिताईसो देखावै भयकारीहै । पूर्वजन्म पापसे कलेशलेश काहू कछु होय सो सुनाय शाप कहत हमारीहै ॥ जगत बडाईवश ह्वैकै रघुनाथ लैकै आनकै ब-लाय शिर आपनेमें धारीहै ॥ निपट निषिद्ध तजि सिद्धनक दीजै तौन भक्ति बीच बडी एक सिद्धता बेकारी है ॥ ६१ ॥ दुख सुख मान अप-मान सपने न मन मान तजे साँचे सतसंगी आठ

यामके॥ कनक कामिनि काँच आँच सम मानिने-
क जाय न निकट लोभ मोह कोह कामके। क्षमा
दया समता सुशांति तोष सहित अनन्यमन रसि-
क अनूप रूप नामके ॥ रहितविकार रघुनाथज-
न जानौ तेई सहजसुभाय संत साँचे सियरामके ॥
॥ ६२ ॥ भागवतधर्म कर्म फलसे असंगमन
करै जेई संग सतसंगरंग छाकेहैं ॥ वासना र-
हित मन इन्द्रीवश कीन्हें कबौ सपने सुभाय पर
नारिहू न ताकेहैं ॥ ह्वै गए हैं ह्वैहैं अबहूँहैं रघुनाथ
ऐसे हम सारिखे मेजो कहौ तो कहो काके
हैं॥ कर्म मन वचन उपासक अनन्य एकै जा-
नौ संत लक्षण विचक्षण ये जाके हैं ॥६३॥ चा-
हे संत त्यागैं तनु नीचजन गृहबीच चाहैं संत
त्यागैं तनु वनहाट बाटमें ॥ चाहे संत त्यागैं त-
नु प्रण करि क्षणबीच चाहे संत त्यागैं तनु परे
परे खाटमें ॥ चाहे संत त्यागैं तनु देश औ

विदेश बीच चाहै संत त्यागैं तनुसुरसरी घाटमें॥ रघुनाथ लीन्हें सीतानाथ हाथ कीन्हें चीन्हें मुक्ति फेरे अंक लिखे बाँधेहैं कपाटमें ॥ ६४ ॥ जौन अघअमित प्रगट करि कीन्हें मन दीन्हें हित लीन्हें चित चीन्हें तौन ढाँचौ मैं ॥ शीश धुनि रहौं दहौं बहौं बिनस्वारथ न चाहौं रामनाम मलिन हौं गहौंकाचौंमैं ॥ करम वचन मन जन रघुनाथ अब सीतानाथ दीनहौं दोहाई द्वार याँचौंमैं ॥ वाँचौं चोर पाँचौं सो नआँचौं नाच नाचौं और राचौं रामहीं सों ठौर दूसरो न याचौंमैं ॥ ६५ ॥ रघुनाथ तजिकै तिहारो रामनाम मेरो चंचल चपल चित चल पल पल है ॥ ताहूपर निपट मलीन मनमानि मोहिं भयो आइ सहित सहाय कलिमल है ॥ करिकै पुकार कहैं देतहौं कृपाल हाल चाहो तौन करौ अब मेरो कौन बलहै ॥ होतहै हँसाय हाय बानाको बनायतासे बिरह सँभा-

री राम आपनो तो भल है ॥ ६६ ॥ कोई अति आदर विशेषि देखि करै कोई करिके अनादर देखावै कछु भैसीहै ॥ कोई करि प्रेम विनै पूजै परिपाँय कोई कहि कटुवचन लगावे कछु यैसीहै॥ सहजसुभाय से सुनाय रघुनाथ कछु काहूसों न प्रीति कछु काहूसे अनैसीहै ॥ दुहुँहीदातार एक रामहींक मान आप जानै न अशीश शाप होत दुहुकैसीहै ॥ ६७ ॥ आज कलिह तेई बडेज्ञानी जे न मानैं वेदवानी जौन कहैं शेष शंभु शुक गायकै ॥ शुभाशुभकर्म जौन निगम बतावैं तौन तजैं सतकर्म करैं असत अघायकै ॥ नाम रूप आदिहै उपासना न जानैं मूढ कहैं गूढ ज्ञान कहैं कल्पित बनायकै ॥ ऐसे नास्तिकनकी संगति नहिं कीजै तजि दीजै रघुनाथ तिन्हैं मुखै मसिलायकै ॥६८॥ जैमिनि मीमांसा मांहि करम प्रधान करि कहत विशेष कविशेष

समयेनको ॥ गौतममुनीश पाय मत माहिं कर ताहि कहत पातांजलि योग अंत अयनको ॥ सांख्यमैं सुभाय जन जानौ रघुनाथ मानौ प्रकृत पुरुष मुनि कपिल वयनको ॥ विदित वेदांत व्यास वदत अद्वैत ब्रह्म रामहिं प्रधान शास्त्र मानौ सो छयन को ॥ ६९ ॥ कोऊ तौ कहत अति पंडित परमहंस कोई तौ कहत मतिमंद मनरोसहै ॥ कोईतौ कहत उपदेशत अनेकनको कोईतौ कहत अतिनिपटन होसहै ॥ सुनिकै न हरष विषाद उर आवै भावै चाहैं तौन कहैं कछु काहू को न दोसहै ॥ दुखद दुहुँनसे सुखद रघुनाथदास सीतानाथ हाथ चाहैं मारैं चाहै पोसहै ॥ ७० ॥ यहै विज्ञानपद अहै ब्रह्मांडमें जौनजो वस्तूको नामलेवै ॥ वचन ततकालही चौगुणित ताहि कहँ अधिक पुनि पाँचका जोरि देवै ॥ सोई अंक सब दुग्गुण करिदीजिये यही मन एक पहिंचानि

लेवै ॥ वसुभाग दै शेषरहिजाहि रघुनाथ तब रामके नाम कहँ जानि लेवै ॥ ७१ ॥ शंभु श्रुति शेष सनकादिक अनंत संत सबहीक मत मानौ यहै अवलंबहै ॥ उपमा अनेक करि कहत वेदांत ऐसे एक भानु भास जैसे कलश अरंभहै ॥ अनेक मंडलेशमें दिनेश कोशलेश तैसे रामको प्रकाशसो समान ब्रह्मरंभहै ॥ जानै जो न राममैं विलास रघुनाथ ब्रह्म मानै कछु और उर ताके अबोदंभहै ॥ ७२ ॥ निकसत वचन भू अंगसम जानौ जाको राम नामहीन मुख मानौ सोई बिलहै ॥ रामके भजन विन अतिही मलिन ताहि कहौका वचन तस जानौ जस दिलहै ॥ रघुनाथ कहैं देत सुनिकै वचन कोई शंका मतिकरौ यामें तरक न तिलहै॥ सब भांति सुलभ शरण एक आवैकोई महाराज राजा रामचंद्रसो कौशिलहैं ॥ ७३ ॥ अंतसमै करि कागजलै जबहीं यमदूतन लेन

पठैहैं ॥ आयसु पाय तुरंत दशौदिशि लाइहैं घेरि न वार लगैहैं ॥ लैचलिहैं तबहीं मन सत्तरि कोठन कोठन बीच लुकैहैं ॥ देखि दशा तेहि औसरमें रघुनाथ कहैं मोहिं राम बचैहैं ॥ ७४ ॥ दूत रिसाइ दोऊ कर लै गहि मारत मोहिं हुआँ लैजइहैं ॥ जातहि नैन तरेरि तबै यम चित्र गुपित्रके पास पठैइहैं॥सो करनी पुछिहैं मनसे मुखते तब एक जवाब न अइहैं ॥ सौंपहि दूत न ताहि समै रघुनाथ कहैं मोहिं राम बचइहैं॥७५॥ कवि॰ देत्रनहु नाम न मृतक कहैं रीझेकोइ जगतप्रकाश राम राम कहैं रीझेहैं॥नीचवाणि सुनि न प्रसन्नहोते देव कोई जनम हराम कहै रामन अरीझेहैं ॥ याहिसे परत जानि उलटे उदासी वैननिकसतनाम राम कबहुँ न खीझेहैं ॥ ऐसेहु समुझि जो न जपै रामनाम आवै जनरघुनाथ जानौ विषैमाहिं बीझेहैं ॥ ७६ ॥ सुनिकै कुजाति कोइ जोपै अस

कहै मन मुखसों कहत रामनाम कौन फलहै ॥ और जड़जीव जौन कहत न राम मुख तिनहैं बतावो दूरिभयो कौन छलहै ॥ आदि अंत मध्य राम-नाम रघुनाथजन जानिलेइ ज्ञानिऊं प्रतानिऊं कोमलहै।जानतसुभाइसोसहजसुखरामकहुँ अंतहु निकसि आवै यहै बडोबलहै॥७७॥सवै०चारिहुवेद पुराणनको मत मुक्ति को आकर आखर द्वैहैं ॥ जानिसोमानिप्रमानियहै उर आनिकै वानिबिचै सबख्वैहैं॥मनअस्थिरह्वै कबधौं रघुनाथ कहैं सुख साधि समाधि में स्वैहै॥रामके नामके ऊपर धौं कब पामरप्राण निछावरि ह्वैहैं ॥७८॥कोकरै संयम नेम अचार विचारहिये जब आनि वसीहै॥आपहिआप गये सब छूटि शुभाशुभ कर्मकी कौन हँसीहै॥नाम हिसे निशचै करिकै मन लाइकै सूरति डोरि कसीहै ॥ जन् रघुनाथ पुरातन रामसो पूरणप्रेमकी फाँस फँसीहै॥७९॥कवित्त॥ रामनाम प्रगट पुका-

रो गजराज तब जायकै कृपालु काटिडारो गज फंदको ॥ द्रुपदसुताको लागो वसन अरंभ जब प्रगटपुकारो मुखनामनंदनंदको॥विप्रमुनि म्लेच्छ प्रहलादहू पुकारो नाम जानत न ऐसो तासों मूढ मतिमंदको ॥ सुनिकै समुझि रघुनाथजन जानि अबो प्रगट पुकारो नाम सीतारामचंदको ॥ ॥ ८० ॥ भागवत गावै वालमीकि गुहरावै औ अध्यातममें महादेव मानस बखानकी ॥ सबभांति सबमें विचारकरि कीन अस तुलसी गोसाईं जौन प्रगटप्रमानकी ॥ आदि अंत मध्य रघुनाथ जनअसकहैसमुझि बिचारि मति अपनीऔ आन की ॥ जासों जडजगत प्रकाश मानौ सो प्रकाश पुंजकेर राशि एक जानौ रामजानकी॥८१॥सवैया तोसे कहौं सुनुरे दशशीश समेत भुजा गहि बीस उखारौं॥ घननादहि आदिक मारि सबै रघुनाथ सुरेशनकी भयटारौं ॥ लंक उठाय लंगूर लपेटि

घुमाइ चलाइ समुद्रमें डारौं॥रामकृपासे करौंअबहीं
तेहि बीच सिया सोइ शोच विचारौं॥८२॥राइ औ
नोन उतारि दुलारि यशोमतिलै अँगनामें बैठारी॥
माखन लाइ दिया करमें प्रभु खात बुलावत
काग हँकारी ॥ आवत फाग समीप सबै हरि
हाथ दिखाइ झुठावत तारी ॥ लेत जो काग कहै
रघुनाथसो रोवन मोहन मातु पुकारी ॥ ८३ ॥
रोवत देखि यशोमति धाय लगाय गरे चटसोंचट-
कारी॥ दे चुटकी चुचुकारिकै मातु नचावत श्या-
महि गोद उतारी ॥ नाचत लाल सोहाल यही कहि
जात नहीं शिव शेष सम्हारी ॥ भाषतही रघुनाथ
अनाथसनाथ करो तेहि नाथ विचारी ॥ ८४ ॥
नाचि कहौ झुकि झूमि गिरै तब मातु उठाय बजा-
वत तारी ॥ भांति यही सो खिलाइगई जबहीमिसि
मालक श्याम सिधारी ॥ जायसो द्वार मचावत
खेत लगावत बीच तेही फुलवारी ॥ खेलतही

रघुनाथ कहै हरि डारत ऊपर धूरि बिगारी॥८५॥
कवित्त॥ आयबेको हरष न जायबेको शोक कछु
आयबो जायबो रु दो एकसम जान्योहै ॥ स्वर्ग
नर्क बंध मोक्ष चाह चोहरीसे चित्त आनिये नएक
नेक टेक ठान ठान्योहै॥यहौहै विचारसार सबही-
को सर्वमत रघुनाथ जन मनहीको सब मान्योहै
॥ का करै लबार लोभ क्षोभ जहां जाय तहँ संत
रामनामसे संतोष उर आन्योहै ॥ ८६ ॥सवैया॥
अवधेशके ठाकुर द्वारमें एकअनोखोमहाछबिछाज
तहै ॥ मोती सुमाल हिरा लखि कोटि मनोजनको
मन लाजतहै॥रघुनाथ कहाँलों बखाने तहाँ घँटा
घोर घनाघन बाजतहै ॥ हनूमान्गढीमें महान
बडो बाँको रामको दूत विराजतहै ॥ ८७ ॥
अस तीरथ ए कलि बीच बहै मल भागतहै तेहि
नाम लियेते ॥ नहिं वार लगै रघुनाथ कहै तुरतै
तरिजाय सनान कियेते ॥ जलजोर बहै घुमरै

घहरै घुघुकार उठै हरगंग कियेते॥सुनु पापकेबा-
पका कौन कहै यमराजसो आपु डरात हिये ते
॥८८॥कवि॰ महरानी मातु की तरंग नहीं वर
णिजात बहत विपुलरंग रंगको प्रवाह धाराहै ॥
उठत फेननके बुल्ला जनु कमलफूल फुल्ला जल
वट्टरि बधत मंडलमानो इन्द्रको अखाराहै ॥ जल
घूमत घहरहात चलधारा घुघुकार करत घर्घरात
धकधकात धुंधकाराहै ॥ मंडल परत जलशब्द सु
नत हरिजन रघुनाथ कहत बाजत कलिबीच मुक्ति
कोनगाराहै॥८९॥भजन॥ सखीरीमोको साँवरोस
लोनोलोनालागल ॥ घायलघूमिझूमिकहौंरहौका
हि मैन नैन शैन श्यामशर मेरे उर लागल॥ मुकुट
तिलक भाल लोचन बिसाल करमुरलीरसालचल
मानो मत्तमागल ॥ विहरत वृंदावन कुंज पुंज जहां
तहां सोहैसंगग्वाल बाल आस पास बागल ॥ पट
पीत कटि काछे अतिआछे हुते आछे कृपाकोर
की कटाक्षगाय बोछैपीछे साजल॥जबसे निहारीमैं

बिहारी गिरधारी न सँभारी सुधिसारी डारी भारी लाज भागल ॥ कछु न सोहात न वसात अकुलात युग सरिस सिरात दिन राति जात जागल ॥ एकौ पल प्रभुहि विलोकि विन बावरी विकल अंग सकल विरह दाग दागल ॥ नैन भरि तनित समुझिके चरित्र चित्र लिखे चित्रसारी कहि कहौं का मुखागल॥ अंग अंग अमित अनंग अवलोकि छबि रघुनाथ जन तन मनभयो पागल ॥ ९० ॥ सुमिरत रामनामहै नीको ॥ पूजा और न दूजा जानौ मानौ दाशरथीको ॥ मन क्रम वचन राम पदपंकज पूरण प्रेम अमीको ॥ और अनेक यंत्र मंत्र सब समुझत लागत फीको ॥ याके किये कर्म अघनाशत लागत शुद्ध करतहै ही को ॥ और उपाय करै बहुतेरे बोध न आवत जीको ॥संतनके मतसार सोईहै हरि हर शिरको टीको॥ जन रघुनाथ जानि तन मनसों कीन्हय-

है निजठीको ॥ ९१॥ छ० धिक्कार धिक्कार धिक जन्मको पाय मन रामके नामको नाहिंजाना ॥ गर्भकी बात बिसराय बेहोस है मोहवश कियोरस विषयपाना ॥ पाँचकी आंचनमें नाचनाचतर ह्यो सांच गुरु शब्दको नाहिं जाना ॥ रघुनाथ जन जानकी नाथके नामके भजनविनु निमक हराम खाना ॥ ९२ ॥ अरे बेहोस तू होस करता नहीं दोष फिरि देइगा कौनका रे ॥ यह जक्तका रंग बदरंग तू देखिके भूलि क्यों रहा मनमोनका रे ॥ चेतता नाहिं अचेत गुरु शब्द अब आय नगचान दिन गवनका ॥ रघुनाथजन जानि मन मानिविश्वास नित नामजपजानकी रमनका रे ॥ ९३ ॥ मान बे मान मन मूढ मतसार संसार यह एकदिन जायगा रे ॥ तात औ मात सुत भ्रात हित भामिनि भवन भंडार रहित जायगा रे ॥ आजुहि कालहमें आयके एकदिन

अचानकसे काललै खायगा रे ॥ रघुनाथको कहा नहिं मानता मूढ तू आदिहू अंत पछितायगारे। ॥ ९४ ॥ रकार निराकार निर्विकार ब्रह्मसारमैं मकार महातत्त्व प्रकृति शक्ति है समानकी ॥ रकार हरी हर विधि सिधि साध्य सकल मकारमें उमा रमादि होतहैं कितानकी ॥ रकार ओं मकारको अपार रघुनाथ गाथ पावत नपारशेष शारदा बखानकी ॥ उपासना अखंड एक नामकी रहै सदा रकार रामचंद्र हैं मकार मातु जानकी ॥ ९५॥ कठिन उर प्रेमका लागना यार संसारकी सौक सब खाखखाही ॥ जाहिके प्रेम उर लगतहै ताहिस न छूटि घरवार सबसंग जाही ॥ शाह सुलतानसों बलखको बादशाह छोंडदीनी सकल बादशाही॥ दास रघुनाथ तज जगतकी आश सब श्वास प्रति राम कहु श्वास मांही॥९६॥सवै० सत्य सनेह दया दृढता जब शीशधरे भ्रमके घट फूटे ॥ एकमई

जब जानपडी तब द्वैतके ताग तडागते टूटे ॥ वेद बडाई औ कर्म शुभाशुभ नेम अचार तबै सब छूटे ॥ जनूरघुनाथ निरंजन निर्गुणनैननमेंनयना जब जूटे ॥ ९७ ॥ पत्र मूलमें रकार फल फूलमें रकार तूल कूलमें रकार डार डारमें रकारहै ॥ पेड पातमें रकार बात बातमें रकार सात द्वीपमें रकार नवखंडमें पुकारहै ॥ जल थलमें रकार तलातलमें रकार सुतल वितलमें रकार रार सातलके पारहै ॥ जय रकार बहु प्रकार वाणी ओंकार एक साकार निराकारसो रकार सर कारहै ॥ ९८ ॥ सर मानससे सरयू निकरी यह घोरभयंकर धार महाहै ॥ घहरात घटाघट जोर करार अपारसो पातकपुंज ढहाहै ॥ श्रीरघुनाथ के नयननसे निकरी पयधारसो वेद कहाहै ॥ यह मर्म सदा सब संत लखैं अपने मुखसे रघुनाथ कहाहै ॥ ९९ ॥ वासुदेव घाट परमहंसनकी ठा-

ट जहाँ रहैं यहै हाट होता सौदा गुरुज्ञानको ॥ भक्तियोग कर्मकी उपासना वैराग्य सदा साधना समाधि सिद्धि धारना ध्यानको ॥ माया ब्रह्मजीव सीवसार औ असारहै विचार आठौ याम एकनाम भगवानको ॥ श्रीस्वामी बलदेव गुरु पूर्ण प्रभु मेरोहै चेरो रघुनाथदास याही स्थानको ॥ १०० ॥ जप योग विराग सुसाधन धर्म दया दम तीरथ जायनमें ॥ मत माधुनिमावत विष्णु श्रियो परमातम आतम भायनमें ॥ रघुनाथ नवौ सतशास्त्र छवो अरु वेद पुराण न गायनमें ॥ जहँलै भलकै फललै सबसो तुलसी कृतरामरमायनमें ॥ १०१ ॥

॥ भजन ॥ भजुमन रामचरण ओ सीता । मन क्रम वचन निरंतर निशिदिन हैं अपने मनहीता । धरेउदेह निजभक्तहेतु प्रभु माया गुण गोतीता। सुमिरौं सोइ सुखराशि राम सिय यहैभागवतगीता। कामक्रोधमदलोभमोह वश करत करम अनरीता।

यमयातना योनिसंकट बहुसुनत न होतसभीता॥ अब उर आनि मानि सतगुरुमत करिके मन अस्थीता॥ जनरघुनाथ राम नामहि जपु जन्म जात यहबीता१०२॥ रामविना कोइ काम न ऐहैं॥ जेहिसुखको सुखमानि लिहे मन सो सुख वाके संग न जैहैं॥ तन धन धाम जानि आपन करि है हमरोहमरे सँग जैहैं॥ सोसुखएकसंग सुनुमूरुख छूटत देह हिआं रहि जैहैं॥निजस्वारथ हितलागि प्रीतिकरि धूँधिधूँधि सबकोइ धन खैहैं॥१०३॥ करिहैं प्राणपयान तोहिं तब देखतही सबलोग खिहैंहैं॥ जब यमराज हिसाब पूछिहैं पूंजि छूंछि तब ल्यावन ऐहैं॥ सांसत घोर पुकारत आरत तेहि अवसर तोहिं कौन बचैहैं॥ मन क्रम वचन विचारि भजन करु रामभक्ति सब भाँति हितैं हैं॥ जन रघुनाथ राम सुमिरन विन आखिर अंत समै पछितैहैं॥ १०४॥ नहीं सहज फकीरी

करनारे॥ आतपवात सहै तनु ऊपर घास फूसको परनारे॥मात समान लखै परनारी काम क्रोधको जरनारे॥जोइ कोइ रहनिरहै संतनकी जियतहोय तेहि मरनारे ॥ जो असियुक्ति यतन जानै मन तौ भवसागर तरनारे॥जन रघुनाथ सांच सोइ निरखै हरि गुरुचरणन परनारे ॥ १०५ ॥ आयसु दूत सोई सुनिकै कर बाँधि दोऊ द्रुमलै लटकैहैं ॥ कोटि गदागहिकै मरिहैं उर लागत जीव पुकार मचैहैं॥काह न राम कह्यो तबसे कहिकै ऐसे महि फेरि गिरैहैं॥सो लखिकै यमचोटनसे रघुनाथ कहै मोहिं राम बचैहैं ॥१०६॥ कवित्त॥सोई शूर वान धीरवान वीरवान बली सोई मनुज महीमध्य महामर्द गाजीहै ॥ सोई ज्ञानवान ध्यानवान धर्म कर्मवान सोई धनवान धन्य सकल सुकसमाजी है ॥ सोई योगवान यंत्र मंत्र युक्ति मुक्तिवान सोई भोगवान भुक्ति भक्ति ताहि छाजी है ॥ ज

राम राजीहैं निवाजी सर्फराजी रघुनाथ सोई पंडित सोई मुलासोई काजीहै ॥ १०७ ॥ श्रीसरयूतट मोद प्रमो दबने रमने मणिमय सबठामैं॥ शीतल-मंद सुगंध समीर सुहाय सबै ऋतुशीतन घामैं ॥ हाथ लसैं धनुबाण कसैं कटिपीत दूकूल सखानके सामैं ॥ रंगरसे रघुनाथके रामकुमार विहार रहैं करतामैं॥ १०८॥ लालके नैन विशाल विमोचन दैनन मैंननके मदजालके ॥ जालके जक्त करालके कालके मेटत अंक लिखे विधिभालके॥ भालके भौंह कमान कसे सरसे रघुनाथ हियेहित मालके ॥ मालकेलोक अनेकनके सम एण नये न नये नृपलालके ॥१०९॥ बालपनेमें न बालन संग अघाय स्वतंत्र न खेलन पायो ॥ पाय युवाधन धाम समारि न नारिनहूके भयो मन भायो ॥ आय जरावश अवधपुरीमें न राम सियापदमें मनलायो॥हा इतको न भयो उतको

रघुनाथ वृथा नर देह गमायो ॥ ११० ॥
कोश न जात पयादेइ पाँय विना पदत्राण लिये शिरमोटैं॥रामकृपा गजवाजी अनेक खडे अब द्वार पगारन लोटैं ॥ द्वारहु होन न देत खडे सबते अब आयकै पाँयन लोटैं ॥ जन रघुनाथ गरीबनसंग करी ज्यों करी दशरत्थके ढोटैं ॥ १११ ॥ कलि काल करालमें आठौहियाम रहैंमलते मनवोदहिरे सियरामकथा न जहाँ तहँ है सब शास्त्रनमें बक-वादहिरे ॥ ऐसे प्रपंचनते भजिकै तजिकै सब वाद विवादहिरे ॥ रघुनाथ निरंतर काहे न लेतहौ रामके नामको स्वादहिरे ॥११२॥ सियराम क-थाको कहाकरे राम रटै अपरै कछु औरन भाखैं॥ जोइ जौन कहै सोइ तौन कहौ आज तौन उठाहि धरै सब ताखैं॥ सोवत जागतकै अपनेम अहहि रघुनाथ महाँ अभिलाखैं ॥ अवलोकत आठौंइ नाम रहैं करुणाकर रामकृपालकि शाखैं॥११३॥

दीन दुखहारी भारी बाना महाराज तेरो देखि क-
लिकालकै धो भभ्भारि भुलायगो ॥ केते दुख दा-
सके विलोकि सहिलेन लाग्यो कैधौं रघुनाथ ते-
रो बदलि सुभावगो ॥ होतनाहीं बोध केते मन स-
मझायदेखों जाने बिना भेद अतिचित अकुला-
यगो ॥ साँकरीमें दीनकीन न करल सहायकहैं
बानगी चुरायके किधौं धनुष हिरायगो ॥११४॥
त्यागो जप योग विराग सदा सतसंगति साधनकी
करिये॥सत भाय कृपाल कृपाकर भाउ प्रभाव प्र-
मोद हिये भरिये ॥ नित नेम सप्रेम लिये रघुनाथ
निरंतर राम सिता रटिये ॥ अरजी यह आरतीकी
कबधौं करुणाकर काननमें परिये ॥ ११८ ॥
॥भजन॥सुनु सखिश्याम लगे इन नैनन॥ कहब
सुनब कछु मोहिं न भावै समुझावै कोई जनि बै
नन ॥ यह मन हरन माधुरी मूरति पलएक छन
देखे बिन चैनन॥ जन्मौ अब जेहि योनि जहाँहम

तहँ अब कबहुँ विषै मन देनन ॥ जन रघुनाथ निरं-
तर यह छबि मनक्रम वच विसरै दिन रैनन ११६॥
कवित्त-पृथ्वी अप तेज वायुशून्य मिलि देह ता
हीसो कर्ममानि जीवसो कहाइये ॥ येते कोटि क-
लश प्रकाशवत एक रवि ज्योति रघुनाथ अनेकन
लखाइये॥ घटाकाश मठाकाशभिन्नभिन्न आसपास
विनसत महाकाश सहज समाइये॥ पाय सतगुरु
ज्ञान राखिये सिद्धांत एपै देह धरि नेह सीतारामसों
निबाहिये ॥११७॥ जोतो तुम सत्य सत्य गुरुन
चितायो होइ तौतो तुम कहौ सब तत्त्वही निसो-
तिकै ॥ कहाँसे उठत वाय आवै कहाँ जाय कहाँ
झलरी लखाय झलकत मणिमोतिकै ॥ कहाँ धरै
ध्यान कहाँकरै अस्नान कहाँ सुखमानि शोधिबैठै
लखै छबि जोतिकै ॥ कहै रघुनाथ जन नादको
प्रकाश कहाँ निकसत कहाँ अनहद शब्द होतिकै॥
॥ ११८ ॥ ब्रह्महीकी इच्छासे पवन नाभि कम

लाय उलटि चढावै नाल वंकही समारहै ॥ इंगल पिंगल सुखमनै समारि सुमिरनसो अस्नान ध्यान सहस प्रकारहै॥बैठि ध्यान त्रिकुटि लगाय रघुनाथ लखै ज्योति झलकार अति अगम अपारहै ॥ क्षर अक्षरसे न्यार निराकार निराधार हद्द बेहद्दके पारशब्द सार रामाकारहै ॥ ११९ ॥ सुरतशब्द साधकै आकाशमें समाधिकै रकारको सुपच्छ लय सुहागलै जगावती ॥ गगनगुफा पैठिकै पचीसउसे ऐंठिकै पाँचहूके रंगको अनंगले लगावती॥उठत झनकार रोम रोम रराकार तहाँ भेरी घुघुकात धुन मुरली सुहावती ॥ दास रघुनाथ रघुनाथके शरनहै तो लाय रामरंगसार शब्दको सुनावती ॥ १२० ॥ इंगला पिंगला सुखमना शोधके सुरतकी बान नीसानको मारती ॥ ज्ञान के अग्निसे शुभाशुभ कर्म जर छार तनुतूर गुण तीनको त्यागती ॥ त्रिकुटी महलसे शोध नवद्वार

कर बंद बेहदके द्वारको उघारती ॥ दास रघुनाथ या भाँति रामरूप लखि अपर सुख सर्वमें लात को मारती ॥ १२१ ॥ खेचरी जीहसे नाम उच्चारि आगोचरी उलटि ब्रह्मांड जावै ॥ चाचरी तिर्य्यमुख तत्त्व त्रिकुटी लखै भूचरी शब्द शब्दै मिलावै ॥ उन्मुनी नासिका एककरि तव ध्यानमें जगमगती ज्योति आवै। रघुनाथ ये योगमुद्रा सुक्षुद्रा समुझि हरिसमुद्रा चरण शरण आवै ॥ ॥ १२२ ॥ वाजि गज साजे रथ सुतरके तारे जेते प्यारे ऐंडवारे जे सबीहैं सरदारके ॥ कुँवर छबीलेजे रसीले राजवंशवारे शूर आनियारे जे सबीहैंसरकारके॥केते जेतवारे केते देशवारे सोन सिंह छैलशूर सबी जेसबीहैं सरकारके॥डंकाके धुकारमें सवारस ब एकैबार राजवारे पारद्वार कौशलकुमारके१२३ देखो सखी आज रघुराज महाराजजूकी निकसी सकल असवारी और तौरहै। भरत लषण रिपुसू-

दन सुजान हनूमान् बलवान वीरसंग शिर-
मौरहै ॥ हाट बाट घाट ठाट ठौर ठौर रघुनाथ
एक एक उठत अनेकलौर झौरहै ॥ चंचलतुरंग
सोहैं सकल सुरंग एपै रामके तुरंगकी तरंग कछु
औरहै ॥ १२४ ॥ देखो सखी आई श्रीरामकी
सवारी महा गरद उडत तासों रवी न देखातहैं ॥
आगे सोहैं राम पाछे बंधु सुखधाम शुभ चमर
ढुसवें छत्रछाये मन लेतहैं॥ सुभग मुकुट शिरकुं-
डलसुलोल उर मोतिनके हारमिलि रहे छबिदे-
तहैं ॥ कहै रघुनाथ जन घोडे सब आछे पर
रामको तुरंगवर जंगहुते जातहैं ॥ १२६ ॥ चंचल
चपल आगे चलिजात वाहनसों छम छम बाजैं
पाय पैंजनी सुवरहै । गुहकेश मोतिनसे हीर-
नके हार झब्बे बाजत निशान मनो घन घहरा-
तहैं ॥ जीन मणिरचित पै राजैं रघुराज शोभ
पीवत सुनैन जे अवधमें रहतहैं । कहैं रघुनाथ

जन घोडे मनभाव सब रामको तुरंगवरवश मन लेतहैं ॥ १२६ ॥ खम खम चलत हलत अँग एकौ नाहीं झम झम बाजत है मेल फूल सोने की ॥ फुर फुर फरकत अधर पावन खुदि मुदि मुदि जातगात वातसे उडनकी । किमि कहौं छबि रघुनंदनकी बाजिनकी मदन सुवाज होय सेवाकरै लालकी ॥ कहै रघुनाथजन रामजीके पाछे शुभ सोहत सवारिप्रिय प्राणभरत भ्रातकी ॥१२७॥ लालरंग पीतरंग श्यामरंग श्वेतरंग चतुरंग घोरे मन मोरैं रवि वाजके । यथायोग पट ओढे लालन लवारि दीन्हें ठुम ठुम चाल लिये भावै रसिकनके ॥ कटि कसे तूण कर धनुबाण ढाल सोहैं काम क्रोध मोह द्रेष देखत दुरतके । कहै रघुनाथ जन राघोजीके दहिने सुसोहत सवारी प्रियलषण ललनके१२८॥ बायेंशत्रुशाल संग बड सरदार जिन्हैं धाय पहिरा

वैं मालि माला सुमननकी ॥ मंदमंद हँसैं लालतु-
रँग नचावैं चंद्रवदन देखाय रुचि राखैं निज जन
की ॥ द्वार द्वार आरति करत पुर नारि नर देखि
कै विहार वन महल आवनकी ॥ कहै रघुनाथ
जन रतनसिंहासनपै राजैं रामजानकी सुजोरि
धन शिवकी ॥ १२९ ॥ सोनेके भवन सिंहासन
आसन ऊपर रामलला लसतेहैं ॥ श्रीमिथिलेश
किशोरीके ओरन नयनके कोरनते हँसते हैं ॥
एक मिलै घनदामिनि दोऊ कसौटीके कंचनते
कसतेहैं ॥ रूप अनूप बने रघुनाथ सदा उर दा-
सनके वसतेहैं ॥ १३० ॥ सुनौ सीताराम गुण
गावौं सीतारामहींका रूप सीतारामहींका ध्यान
समै ध्यावौं मैं ॥ रटौं सीताराम कर्म करौं सीता-
रामहींका संत सीताराम धाम चरण चलावौं मैं ॥
करम वचन मन जन रघुनाथदास सीताराम-
हींका अहौं कहौं औ कहावौं मैं ॥ पाहि पाहि

पाहि हौं तिहारो तजि रामनाम सपनेहुँ औरकी शरण नहीं जाउँ मैं ॥ १२१ ॥

इति श्रीस्वामी महाराज रघुनाथदासजीकृत कवित्तादि संपूर्ण ॥ शुभमस्तु ॥

अथ श्रीस्वामी महाराज रघुनाथदासजीकृत दोहावलीप्रारंभ ।

दोहा ।

ॐ तन मनते रघुनाथजन, जानिलेहि रे नीच ॥
मीच रही मडरायशिर, रामरराहिं यहि बीच ॥ १ ॥
अस सहजहि बनिजात जस, छन्द प्रबंध कवित्त ॥
तसन रहत रघुनाथ कस, रामचरणवश चित्त ॥ २ ॥
मन हमार रस एक अस, रहत रोज पररोज ॥

पदसरोज रघुनाथजन, जप तप और नप्रोज॥ ३॥
जप तप संयम नेम व्रत, योग याग वैराग ॥
फल सबकर रघुनाथ भल, रामचरण अनुराग॥ ४॥
जन रघुनाथ हमार मन, रहि रहि अतिअकुलाय॥
पाय हाय ऐसहु जनम, रामभजन बिन जाय॥ ५॥
राम राम रसना रसनि, कसनिअपनि करिलेत॥
छन छनजन रघुनाथ मन, बढत रामसन हेत ॥ ६॥
मन हमरे रघुनाथजन, शोच रहत अब ऐस ॥
अंत समै सियराम बिन, मरबकरबतब कैस ॥ ७॥
जौन सही रघुनाथ जन, जिय अपनेकी भूल ॥
तौन न अब तनकौ रही, रामभये अनुकूल ॥ ८ ॥
भजहिं तजहिंतजिफिरिभजहिं, जनरघुनाथ अबुद्ध
असि मति मलिन हमारि अब, राम करहिं कबशुद्ध
जन्मसिरानो जात अस, जसलोहे कर ताउ ॥
मारउन मन रघुनाथजन, पाउ आउ रघुराउ॥ १०॥
मरिहौं रे रघुनाथ लै, करिहौं कातन तौन ॥

परिहौं रे नर रौरवन, रामरहित तरि हौं न ॥ ११ ॥
रसना कसना रामको, नाम निरंतर लेउ ॥
टेउऔरिरघुनाथजन, जानिमानि तजिदेउ॥ १२ ॥
हमहिं जहाँलग जगतसुख, जानि परत जसधूरि ॥
रामनाम रघुनाथजन, जपतसजीवनि मूरि॥ १३ ॥
को हमरे घरघर फिरै, रगरतमाथ अनाथ ॥ हाथ
सकल रघुनाथजन, जपत जानकीनाथ ॥ १४ ॥
हमरेमनकी वासना, आपहि आप बिलाय ॥
रही जगतकी आसना, रामरूप दरशाय ॥ १५ ॥
कबहुँ न जन रघुनाथ मन, रँगे राम रसरंग ॥
होशगये हैंदंग सब, अंगभये जब भंग ॥ १६ ॥
देहमान अभिमान मन, जन रघुनाथ न लेइ ॥
सेइ धेइ हियहर्षि जिय, अरपि राम पर देइ ॥ १७ ॥
रामकृपहि रघुनाथजन, जपहि तपहि जहि तौन ॥
कौनन सुखसब जौन अब, सन्मुखरुख सियरौन॥
महाराज श्रीराम अस, पाय तातसियमात ॥

जिय हमाररघुनाथ जस, बालक कस विलसात १९
जोम जवानी गये जब, भये आय अति वृद्ध ॥
लये चरण रघुनाथ तब, तकि जे दइ गतिगृद्ध २०
करत रहत रघुनाथ यश, वेश सबन उपदेश ॥
तसन रहत रस एक कस, रामचरण परलेश ॥२१॥
राम भजहिं रघुनाथजन, जिनहिं न कछु परवाह ॥
होत तिनहिं दिन दिनहिंअब, रोजवाह परवाह २२
तन मनते रघुनाथ जन, रँगे रामरँग जौन ॥
तौन परे कहैं कैं, कवन योग जपहौन ॥२३॥
कर्म वचन मन पनकरत, रटत राम कसनाम ॥
हृदयनसनरघुनाथजन, तिनसनहमसन काम २४
श्रुति पुराण साखी सबै, इह हुंडी सबसत्ति ॥
धनी संत रघुनाथजन, तिनबिन मिलैन रत्ति २५
सो हुंडी रघुनाथजन, जो कदाचि कोइ पाय ॥
साह हुंडिया ना मिलै, कहो सो कहाँ बिकाय २६
है धन स।धन की यही, राम मिलनकी रीति ॥

देइ तुरत रघुनाथजन, जो यांचै कारिप्रीति ॥ २७ ॥
संतशरण आयो नहीं, गायो नहिं नृपलाल ॥
बीतिगयोरघुनाथजन, जन्मबजावतगाल ॥ २८ ॥
ब्रह्म ज्ञान वैरागवर, रहत हमारे हाथ ॥
हरिसाइतिरघुनाथजन, जपतजानकी नाथ ॥ २९ ॥
छन छन छूटत जातहै, हमरे मनका मैल ॥
पन पकरे रघुनाथजन, रामरंग इकगैल ॥ ३० ॥
हीय हमारे ते गये, अतिलजाय रतिकाम ॥
जीय आय जबते बसे, सीयसहित श्रीराम ॥ ३१ ॥
अतिसकुचाय गये सकल, संसारिक सुख जौन ॥
जबते जन रघुनाथमन, जपतजानकी रौन ॥ ३२ ॥
अष्टसिद्धि नवनिद्धिलै, सन्मुख सकत न आय ॥
रामरायअपनायअस, जानिमानिसकुचाय ३३ ॥
मनकी कौनो कल्पना, बाकी ना रहिगैल ॥
महाराज दशरत्थके, देखि छबीले छैल ॥ ३४ ॥

अर्थ धर्म कामादिसुख, मोक्ष वोक्षि अतिलागि॥
मति हमारि रघुनाथ अति, रामरूप अनुरागि ३५॥
हमरे मनकी दीनता, दिन दिन होत मलीन ॥
लीन प्रेमपण पीनजल, कीन नाम मनमीन ३६॥
अनगन तिन हमरे घरे, भरेधरेहैं वित्त ॥
नाम रूप लीला ललित, लेत देतहैं नित्त ॥३७॥
सुरनर मुनि सनकादिशिव, सकल प्रशंसतजाहि॥
देखे दशरथ रायके, गोदमाहिं हम ताहि ॥३८॥
अतिअद्भुत आनंद इक, कहत लहत विश्राम ॥
सकल जगतमें रमिरह्यो, रामचंद्र असनाम॥३९॥
मन हमार रघुनाथ जन, पन पकरे अतिहीय ॥
मतिगति अपनिपपीहकी, स्वातिसलिलसियपीय
शोच करत रघुनाथजन, गई उमरि सब बीति ॥
भई न कछु जैसीचही, रामचरणपर प्रीति॥४१॥
शोच करत रघुनाथजन, मन हमरे दिन रैन ॥
कबहुँ निरंतर आय उर, राम कराहिंगे ऐन ॥४२॥

रामभजन बिन जातअस, दुर्लभ मनुज शरीर ॥
छन छन निघटत जातजस, अंजलि कसलसनीर
सकल श्रुतिन स्मृतिनसन, समुझिलेब सब भेव॥
सेव राम रघुनाथ अब, और देव नाहिं केव॥४४॥
रामचंद्र रघुनाथजन, जानहु ब्रह्म अनादि ॥
मानहु जेहि सनकादि शिव, सुमिरत सहसफनादि
जप तप संयम नेम व्रत, बोलिगये कलिबम्ब ॥
हम रामहिं रघुनाथ भलि, खोलिलहे अवलम्ब४६
अधमरन सन रघुनाथजन, जौन कीन रघुराव ॥
तौन अजहुँयहि वोर बहु, आउ न सहजसुभाव४७
है रघुनाथ न औधनृप, लाल शरणजन जौन ॥
तौनअनैसनसनकरन, बोलनचालनकौन॥४८॥
हमहिं मनहुँ रघुनाथ सब, और न कलिकररूप॥
सकल राममय माननो, अकलउ अपन स्वरूप४९
सीय राम रघुनाथ जन, अपनायो जन जौन ॥
तौन और अरि जोरकरि, कोर ताकिहै कौन९०॥

कबहुँ न नाम रटे अरे, करे पोचके काम ॥
शोचन मन रघुनाथजन, कहँहम कहँ फिरिराम८१
रामस्वरूप अनूप अस, तौन करी रसस्वाद ॥
कौन परी रघुनाथ जन, औरन सन बकवाद॥८२॥
तन मन धन रघुनाथ जन, अहहिं हमारे राम ॥
कहहिंसुनहिं सुमिरहिं गहहिं, रहहिंसँभारे नाम८३
मन सुत वित वनितानिके, रहे रंगरस फूलि ॥
भूलि गये रघुनाथ जन, नामसंजीवनिमूलि॥८४॥
रामरहित रघुनाथ जन, मन देखौ करिगौर ॥
कल्पकोटि लग लोकहूँ, वेदहुँ और न ठौर॥८५॥
जूझिमरे अभिमानवश, मायाके रसअंध ॥
सूझि परे रघुनाथ जन, तिन्हैं दलन दशकंध॥८६॥
दृष्टि परे रघुनाथ जन, जिय हमरे रघुवीर ॥
इष्ट करे शर धनु धरे, श्रीसरयूके तीर ॥ ८७ ॥
जन रघुनाथ न जौन नर, करे कबहुँ मुँहु सौहँ ॥
राम कृपाते तौन सब, खडे निहारहिं भौहँ॥८८॥

एक कहैं दुइ होतहैं, दोइ कहैं नहिं जाय ॥
एक दोइ रघुनाथ जन, नाम जपत बिलगाय॥६०॥
करमविवश हम जाय जहँ, जन्मैं जहजेहि योनि॥
तहँ रघुनाथ चहहिं लहहिं, रामचरण रति होनि॥
महाराज श्रीरामके, भायनमें भरिपूरि ॥
दोहा ये रघुनाथ जन, मन मोहाकरि दूरि ॥६१॥
रहनिगहनिसमुझनिगुण, निकहनिसुननिसमएक
निबहिजाय रघुनाथ जनु, यहीभक्तकीटेक ॥६२॥
गुरुते लीन्ह्यो मंत्र सुनि, कीन्ह्यों नहिं सतसंग॥
रघुनाथ नाम चीन्ह्यों नहीं, क्यों लागे हरिरंग६३
महाराज श्रीरामके, सन्मुख शरण प्रपत्ति ॥ सु-
खसमूह है लोकहूँ, परलोकहु है गत्ति ॥ ६४ ॥
मंगल श्रीसरयू सरित, मंगल विपिन प्रमोद ॥
मंगल सीतारामजू, जो मोदहु को मोद ॥ ६५ ॥

इति श्रीस्वामीमहाराज रघुनाथदासजीकृत
दोहावली संपूर्णा ॥ शुभमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

अथ रामदास्याष्टकम् ।

श्रीजानकीवल्लभोविजयतेतराम् ॥ श्रीमतेरामानुजाय नमः ॥ श्रीमत्परमाचार्य परमविज्ञानशीलसत्कविवृंदकमलप्रभाकर श्रीगोस्वामितुलसीदासाय नमो नमः ॥ सोरठा—बंदौं मुनिपदकंज, रामायण जिन निर्मयो ॥ सखर सकोमल मंजु, दोषरहित दूषणसहित ॥ १ ॥ इससोरठके अर्थमें श्रीमानसप्रचारिकामें श्रीटीकाकारजीने एक अर्थ किया है कि, दास्यरस दूषणसहित है ॥ सो टीकाकारजीने इस अर्थमें परोक्षमें दास्यरसकी अतिउत्कृष्टता वर्णन करते हैं कि, स्वामीसे सेवक अपना धर्म कहाँ तक पालेगा ? काहे कि स्वामी ब्रह्म है और सेवक जीव अल्पज्ञ है ॥ परन्तु आज कलके श्रीमानसप्रचारिका बाँचनेवाले महात्माओंमें कोई कोई अपनी बुद्धिकी कल्पनासे यह अर्थ

करते हैं कि निश्चय करके दासरस दूषण सहित है और दो चार दोषभी अपनी कल्पनासे कहते हैं ॥ सो प्रत्यक्षमें यह अर्थ सुन करके मैं जो हौं श्रीराम दासानुदास परमहंस द्वारका दास बडी छावनी श्रीमद्गुरुगादीके गुला श्रीमानसप्रचारिकाका छपानेवाला तिसको फिर कछु परिश्रम करके दासरसमें कहना परा सो आज जो हैं श्रीअयोध्यावासी महात्मा पंच रस उपासीका इस स्तोत्रके द्वारा आप विचार करें कि दास्यरस दूषणसहित है कि संपूर्ण रसोंमें भूषणसहित है ॥ इस हेतु इस स्तोत्रका नाम श्रीमानसभूषणसारसंग्रह है ॥

श्लोकः ।

सीतां रामं मरुत्सूनुं श्रीगुरुं भारतीं च वै ॥
स्मृत्वा गोस्वामिकाव्यस्य सारं समुद्धराम्यहम् ॥
॥ १ ॥ श्रीमत्तुलसीदासोक्तं काव्यं सर्वत्र विद्यते ॥

श्रीमद्रामचंद्रसत्त्वं तद्विज्ञेयं विवेकिभिः ॥
॥ २ ॥ अथ बालकांडे श्रीतुलसीदासवाक्यम्
सीताराममयं ज्ञात्वा जगत्सर्वं करोम्यहम् ॥
प्रणामं संपुटं कृत्वा हस्तयोः काव्यसिद्धये ॥ ३ ॥
कृपाकरस्य मां ज्ञात्वा रामचंद्रस्य किंकरम् ॥
छलं त्यक्त्वा संमिलित्वा सर्वे कुर्वंत्वनुग्रहम्॥४॥
पुनर्वाक्यम् ॥ श्रीमद्दशरथं भूपं सर्वभार्यासम
न्वितम् ॥ मंगलस्य सपुण्यस्य मूर्त्ति मत्वा नमा-
म्यहम् ॥५॥ मनसा कर्मणा वाचा मह्यं कुर्वंतु ते
कृपाम् ॥ ज्ञात्वा मां सेवकं शश्वत्स्वपुत्रस्य
प्रियस्य वै ॥ ६ ॥ अथानुप्रसंगे शिववाक्यं
शिवांप्रति ॥ स्वदासं तं मनुं ज्ञात्वा शतरूपापतिं
प्रभुः ॥ सर्वज्ञस्तापसं रामो ह्यनन्यगतिमेव हि
॥ ७ ॥ उक्तवांस्तं च याचस्व पुनः पुनः स्व-
कांक्षितम् ॥ एवं स्वस्य परोक्षस्य वाण्याकाशे
तदाभवत् ॥ ८ ॥ कृपामृतयुतानंतगंभीरा-

मृतजीविनीम् ॥ श्रुतिरंध्रेण तां श्रुत्वा हृष्टपुष्टो भवन्नृपः॥ ९॥ अथ सीतावाक्यम्॥ कायेन मनसा बाचा यदि सत्यं व्रतं मम ॥ राघवेंद्रस्य पादाब्जे मनश्च मे रतिं गतम् ॥ १० ॥ तर्हि सर्वगतो देवस्त्वदासीं मां करोतु वै ॥ यस्या यस्मि न्परः स्नेहः स तां प्राप्यो न संशयः॥ ११ ॥ अथ सुनयनावाक्यं श्रीरामं प्रति॥सीतां पुरीजनानां वै नृपस्य च कुटुंबिनाम् ॥ ज्ञात्वा प्राणात्प्रियां राम सुशीलां किंकरीं कुरु ॥ १२ ॥ अथ जनकस्य दानप्रसंगे शिववाक्यं शिवां प्रति॥सीतायै जनको राजा दासीदासगणान्बहून् ॥ प्रददौ याः प्रियास्तस्या जानक्याः प्रियसेवकाः ॥ १३ ॥ अथ जनकवाक्यं श्रीरामं प्रति ॥ कृतांजलिपुटो राम प्रणामं त्वां करोम्यहम् ॥ कदापि त्वत्पदाम्भोजं मनो मे न त्यजेदिह ॥ १४ ॥ अयोध्याकांडे च श्रीरामं रामस्य बालमित्राणां वाक्यम् ॥

इह कर्मवशाच्चैव यां यां योनिं भ्रमाम्यहम्॥ तत्र तत्र हि नः स्वामी रामचंद्रो भवत्विति ॥ १५ ॥ अथ कवेर्वाक्यम् ॥ गृहीत्वा चरणांभोजं लक्ष्मणोप्याह राघवम् ॥ त्वं स्वामी नाथ दासोहं कथं मां त्यक्तुमिच्छसि ॥ १६ ॥ अथ वनवासकाले कवेर्वाक्यम्॥दासीदासगणान्रामो मेलयित्वा पुनःप्रभुः॥ रक्षणार्थं तु तान्सर्वान्गुरवे दत्तवान्किल ॥ १७ ॥ बद्धांजलिर्वसिष्ठं च ततो रामोब्रवीद्वचः ॥ एतेषां रक्षणं स्वामिन्मातृवत्पितृवत्कुरु ॥ १८ ॥ अथ वाल्मीकेर्वाक्यं श्रीरामं प्रति ॥ मनसा कर्मणा वाचा ये जनास्तव किंकराः ॥ तेषां त्वं हृदये वासं कुरु श्रीराम सर्वदा ॥ १९ ॥ अथ भरतवाक्यं गुरून् प्रति ॥ अरीणामप्यभद्रं वै श्रीरामः कृतवान्कदा ॥ सेवकस्य शिशोर्मे स दुःखदः किं भविष्यति ॥ २० ॥ अथ श्रीभरतवाक्यं गुहं प्रति॥ कृतोहं स्वामिनि द्रोही कुमात्रा सांप्रतं

सखे ॥ कुले कलंकरूपो हि विधात्रा रचितो भुवि ॥ २१ ॥ अथ भरतवाक्यं सेवकान्प्रति ॥ व्रजामि शिरसा रामं सुचित्तं मे भवेत्तदा ॥ कठिनः सर्वधर्मेभ्यो धर्मोत्र सेवकस्य हि ॥ २२ ॥ अथ भरद्वाजवाक्यं भरतं प्रति ॥ सीतालक्ष्मणरामाणां दर्शनं च वयं गताः ॥ २३ ॥ तस्य महत्फलस्यैव फलं नस्तव दर्शनम् ॥ उपदेशं हि प्राप्तं नः कलंकात्ते महत्तरम् ॥ २४ ॥ अथ सुरगुरोर्वाक्यं सुरेशं प्रति॥मायिना प्रेरिता माया मायानाथस्य सेवके॥ ॥ २५ ॥ पुनरागत्य तस्मिन् सा प्रेरके पतति प्रभो स्वीकरोति सदा रामःसेवकस्य रुचिं सदा॥२६॥ पुनर्गुरोर्वाक्यम् ॥ सीतेशसेवकस्यैव सेवा ज्ञेया सुशोभना ॥ कामधेनुशतेनात्र तुल्या शृणु शचीपते ॥ २७ ॥ अथारण्यकांडे ॥ गोस्वामी सानुजो रामो मह्यं प्राप्तो भविष्यति ॥ तस्य सेवकवत्त्वं हि लोभो मे भविता महान् ॥ २८ ॥

अथ श्रीरामवाक्यं नारदं प्रति ॥ प्रौढपुत्रसमो
ज्ञानी दासो मे भवति प्रियः॥ लघुपुत्रसमो दासो
ह्यमानी शृणु नारद ॥ २९ ॥ अथ नारदवाक्यं
प्रभुं प्रति ॥ एवं कस्य प्रभोर्नीतिर्मनस्त्वं वद मां
प्रति ॥ इत्थं प्रीतिर्ममत्वं च यस्य स्वसेवकोपरि॥
॥ ३० ॥ अथ किष्किंधाकाण्डे श्रीरामवाक्यं
हनुमन्तं प्रति ॥ मां वदन्ति बुधाः सर्वे जीवेषु स-
मदर्शिनम्॥ तत्रापि सेवको नान्यो यस्तु मे स प्रि-
यः सदा ॥३१॥ तत्र हनुमद्वाक्यम् ॥ शैलेस्मिन्
वसति स्वामिन्सुग्रीवो वानरेश्वरः ॥ स त्वद्दा-
सोस्ति मैत्रीं त्वं कुरु तं दुःखितं प्रति ॥ ३२ ॥
श्रुत्वा सेवकदुःखं च दयासिन्धोर्हरेस्तदा ॥ त
स्य शत्रुविनाशाय भुजयोः स्फुरणं ह्यभूत् ३३ ॥
अथ वालि वाक्यं श्रीरामं प्रति॥ भो राम मम चा-
तुर्यं नालं त्वां स्वामिनं प्रति॥ कथमद्य भवेत्पापो
यस्यान्ते त्वं समागतः॥३४॥ पुनर्वालिवाक्यं प्रभुं

प्रति ॥ स्वदासमंगदं देव नरनाथ कुरु प्रभो ॥
गृहीत्वा स्वेन हस्तेन बाहुमस्य कृपानिधे ॥३५॥
अथ सुन्दरकाण्डे विभीषणवाक्यं मारुतिं प्रति ॥
त्वं कश्चिद्धरिदासानां मध्ये भवसि भो द्विज ॥ यं
दृष्ट्वा त्वतुला प्रीतिर्जायते मम मानसे ॥ ३६ ॥अथ
हनुमद्वाक्यं सीतां प्रति ॥ अद्याहं कृतकृत्योस्मि
मातर्जनकनंदिनि ॥ आशीर्वादं तवामोघं विख्या-
तं भुवनत्रये ॥ ३७ ॥ अथलंकाकाण्डे लक्ष्मण-
वाक्यम् ॥ अहत्वा मेघनादं च त्वायास्यामि
यदि ह्यहम् ॥तदा श्रीरघुनाथस्य सेवको न भवा
म्यहम्॥३८॥ अथ लंकाकाण्डान्ते कवेर्वाक्यम्॥
सर्वधर्मविहीनो यो निषादस्तं स्वयं हरिः ॥ दृष्ट्वा
प्रेमाप्लुतं स्वस्मिन्दधार हृदि बन्धुवत् ॥
॥ ३९ ॥ दासो मन्दमतिर्मोहात्तं प्रभुं न स्मरा-
म्यहम् ॥ एवंभूतं दयायुक्तं को विद्वान्नस्म-

रैतसदा ॥ ४० ॥ अथोत्तरकांडे हनुमद्वाक्यं भरतं
प्रति ॥ अस्म्यहं राघवेंद्रस्य दीनबंधोर्हि किंकरः॥
इत्युक्तो भरतः प्रेम्णा तमालिंगितवान्भृशम् ॥
॥ ४१ ॥ अथ भरतवाक्यं मारुतिं प्रति
त्वद्दासवच्च मां जातु रघुवंशविभूषणः ॥ श्रीमा-
न्स्मरति चेत्तन्मे वक्तुमर्हसि मारुते ॥ ४२ ॥
अथ वेदस्तुतौ॥ ये सर्वाशां परित्यज्य जनास्त्व-
द्दासतां गताः ॥ विश्वासं हृदये कृत्वा ते तरंति
भवार्णवम् ॥ ४३ ॥ अथ शिवस्तुतौ शिववाक्यं
श्रीरामं प्रति ॥ अतीव योगविश्वासं त्यक्त्वा
तु मुनयः प्रभो ॥ स्वकल्याणाय हर्षेण भवन्ति
तव सेवकाः॥४४॥ अथ रामवाक्यं विभीषणादीन्
प्रति ॥कैंकर्य्यता कृतात्यंतं भवद्भिर्मम संकटे ॥
सम्मुखे वः कथं वीराः प्रशंसां प्रकरोम्यहम् ॥
॥ ४५ ॥ पुनस्तान् प्रति भगवद्वाक्यम् ॥ प्रियो

हि सेवकोनित्यं सर्वेषां देहधारिणाम् ॥ मत्प्री-
तिरधिका दासे पूर्वनीतिविधानतः ॥ ४६ ॥
अथ प्रजावाक्यं श्रीरामं प्रति ॥ परोपकारिणौ
लोके प्रोक्तौ द्वौ कारणं विना ॥ त्वं च त्वत्सेवको
राम विद्वद्भिर्दनुजांतक ॥ ४७ ॥ अथवसिष्ठ-
वाक्यं श्रीरामं प्रति ॥ हेनाथैकं वरं याचे
कृपालो राम देहि मे ॥ प्रतिजन्म पदाब्जे ते स्नेहं
भूयान्ममाधिकम् ॥ ४८ ॥ अथ शिवावाक्यं
शिवं प्रति॥महाज्ञानी गुणैः पूर्णो गरुडो हरिसेवकः
अतिसामीप्यवासी च तस्य वै परमात्मनः ॥
॥ ४९ ॥ अथ काकभुशुण्डवाक्यं खगेशं
प्रति ॥ खगनायक रामस्य सेवकानां सुखप्रदम्॥
शृणुष्व चरितं मत्तः पुनीतं वर्णयाम्यहम् ॥ ५० ॥
ततो भुशुण्डवाक्यम् ॥ न व्याप्नोति खगेशाद्य ह्य-
विद्या हरिसेवकम् ॥ हरिणा प्रेरिता तं च विद्य

व्याप्नोति सर्वदा ॥ ९१ ॥ तस्माच्छ्रीरामदासानां न नाशो भवति ध्रुवम् ॥ एवं तस्य सुखेनैव भेदभक्तिर्विवर्द्धते ॥ ९२॥ पुनर्भुशुण्डवाक्यम् ॥ विमोहं कृतवान्रामो मां विशेषेण तर्हि भोः ॥ कृपासिन्धुः कृपां कृत्वा सेवकानन्ददायकः॥९३॥ पुनर्भुशुण्डवाक्यम्॥श्रुत्वासप्रेमवाक्यं मे दीनदासं विचार्य्य माम्॥मृदुगम्भीरया वाचा प्रोवाच सुखदं वचः॥९४॥ श्रीरामवाक्यं भुशुण्डं प्रति॥ स्वदासो मे प्रियो नित्यं विज्ञानिपुरुषादपि॥ यस्यान्याशा तु नैवास्ति सदाहं परमागतिः ॥ ९५ ॥ सत्यं सत्यं पुनःसत्यं तुभ्यं वाक्यं वदाम्यहम् ॥ नहि सेवकतुल्यो मे प्रियः कश्चिज्जनो भृशम् ॥ ९६ ॥ सुशीलः सेवकः शुद्धः कस्य नातिप्रियो भवेत् ॥ श्रुतिस्मृतिपुराणानामिति नीतिर्हि सम्मता ॥ ॥९७॥ पुनः श्रीरामवाक्यम् ॥ सत्यं वदामि भो

काक मम प्राणप्रियः शुचिः ॥ सेवको हि यत-
स्त्वं मां भज सर्वं विहायवै॥ ५८ ॥ अथ गरुड
वाक्यं श्रीभुशुण्डं प्रति ॥ पृच्छामि करुणासिंधो
स्वामिन्स्वाज्ञानतो विभो ॥ स्वदासं मां वदन्प्रे-
म्णा त्वं दासोसि जगत्पते ॥५९॥ अथ भुशुण्ड
वाक्यम् ॥ सेव्यसेवकभावेन विना जीवा भवा-
र्णवम् ॥ न तरंतीति मत्वास्विद्भज रामपदांबुजम्
॥६०॥ पुनर्भुशुण्डवाक्यम् ॥ यदोक्तवान्स विप्रो
मां हरं हि हरिसेवकम् ॥ तदा श्रुत्वा तु तद्वा-
क्यं हृदये मेऽभवद्व्यथा ॥ ६१ ॥ अथ शिववा-
क्यं देवीं प्रति ॥ स्वकीयं किंकरं मां त्वं
विद्धीति गरुडोवदत् ॥ उमे पुनः पुनः श्रीमत्का-
काधीश हरिप्रिय ॥ ६२ ॥ अथ रामायणस्य
श्रेष्ठश्रोता कः पुरुषो ज्ञेयः ॥ तत्रोत्तरकांड-
मध्ये शिववाक्यं शिवां प्रति ॥ सुशीलः सुमतिः

श्रोता रसिको रामसेवकः ॥ प्रकाशं गुह्यबोधस्य
बुधाः कुर्वंति तं प्रति ॥ ६३ ॥ ॥ उपासक प्रति ।
दोहा ॥ वालमीकिरामायणमें, ठौर ठौर रस
चार ॥ मानसभूषण दास्य रस, अर्थनमें पर-
चार ॥ १ ॥ कविताई प्रति प्रमाण दोहा ॥
करुणाशांतिशृंगाररस,रौद्रभयानकवीर ॥ अद्भुत
हास्य बीभत्सरस, नौ रस राम गँभीर ॥ २ ॥
दास्य सख्य वात्सल्य ये, द्वादश रस विख्यात॥
आदि कवीके काव्यमें, पद पद माहि लखात॥

इति श्रीमानसभूषणसारसंग्रहे परम-
हंसद्वारकादासविरचितं रामदा-
स्याष्टकंसमाप्तम् ॥ १ ॥

दोहा–भूलचूकभ्रमवशकछू, जोहोवेयहिमाहिं ॥
कोविदजनकरिहैं क्षमा,अवगुणधरिहैं नाहिं॥ १ ॥

[illegible]